॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# टंकारा समाचार

( श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र )

फरवरी, 2017 वर्ष 20, अंक 2 दूरभाष ( दिल्ली ) : 23360059, 23362110 वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2073 दूरभाष ( टंकारा ) : 02822-287756 ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये कुल पृष्ठ 20


# ईश्वर महान और वेदो वाला ऋषि महान और संसार के आदर्श

❒ मनमोहन कुमार आर्य

इस संसार और पूरे ब्रह्माण्ड में सबसे महान कौन है? इसका उत्तर है कि इस संसार को बनाने व चलाने वाला जगदीश्वर सबसे अधिक महान पुरुष है। ईश्वर के बाद संसार में सबसे महान पुरूष व मनुष्यों के आदर्श कौन हैं, इसका उत्तर है वेदों के अनुयायी व अनुमागी सभी ऋषि महान और समस्त मानवता के आदर्श हैं। हर बात को प्रमाणों से पुष्ट करना होता है तभी वह सर्वस्वीकार्य होती है। अत: पहले ईश्वर की महानता की कुछ चर्चा करते हैं। ईश्वर का विषय आने पर पहला प्रश्न तो उसकी सत्ता को सिद्ध करना होता है। यदि ईश्वर है तो इसका प्रमाण क्या है? हमारा उत्तर है कि हम आंखों से इस संसार को देखते हैं। यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड किसी मनुष्य व मनुष्य समूह द्वारा की गई रचना नहीं है। आज संसार में 7 अरब से अधिक मनुष्य हैं। यदि यह सब मिलकर भी एक पृथिवी, चन्द्र व सूर्य की रचना करने लगें तो यह असम्भव है। मनुष्यों द्वारा असम्भव यह कार्य हमारी आंखों से प्रत्यक्ष हो रहा है जिसमें किसी को भी सन्देह नहीं है। अत: इसका रचयिता ही ईश्वर है। इससे ईश्वर का अस्तित्व सत्य सिद्ध हो जाता है। ईश्वर ने ब्रह्माण्ड में एक सूर्य, चन्द्र व पृथिवी ही नहीं बनाये अपितु अनन्त सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह व पृथिव्यां बनाई हैं जिनका अस्तित्व व अपौरूषेय सत्ता से इनकी उत्पत्ति बुद्धि, तर्क, युक्ति व इनके प्रत्यक्ष दर्शन आदि से सिद्ध होता है।

ईश्वर की महानता को समझने के लिए वेदों में वर्णित ईश्वर के कुछ गुणों का विचार करना भी उपयुक्त होगा। कोई भी उपयोगी रचना बिना ज्ञान व सामर्थ्य के नहीं होती। ज्ञान चेतन द्रव्य में ही रहता है। जीवात्मा चेतन तत्व, पदार्थ वा द्रव्य है। जीवात्मा में ज्ञान का होना प्रत्यक्ष सिद्ध है। जीवात्मा की ही भांति सृष्टिकर्ता ईश्वर का भी चेतन पदार्थ होना सिद्ध हो जाता है क्योंकि सृष्टि कर्तृत्व ईश्वर में ज्ञान व सामर्थ्य की पराकाष्ठा सिद्ध करते हैं। दूसरे गुण सुख व आनन्द पर विचार करते हैं। जीवात्मा कभी अनुकूलता होने पर सुखी और प्रतिकूलता होने पर दु:खी होता है। प्रतिकूलता मुख्यत: शारीरिक रोग व किसी अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति न होने पर प्राय: होती है। इसका एक प्रमुख कारण जीवात्मा का एकदेशी, ससीम, सूक्ष्म व अल्प सामर्थ्य वाला होना होता है। ईश्वर की अनन्त सृष्टि को देखकर उसके अनन्त स्वरूप का ज्ञान होता है। इसका अभिप्राय है कि ईश्वर सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक ही अनन्त हो सकता है और ऐसी सत्ता से ही अनन्त सृष्टि की रचना होना संभव होता है। अल्प ज्ञान व अज्ञान से कोई आदर्श, निर्दोष, त्रुटिरहित व पूर्ण प्रशंसनीय रचना नहीं हो सकती। अत: ईश्वर में ज्ञान की पराकाष्ठा है, न्यूनता किंचित नहीं है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण ईश्वर की बनाई व संचालित यह सृष्टि है। इन सामर्थ्यों से युक्त ईश्वरीय सत्ता के लिए 'सर्वज्ञ' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो कि उचित ही है। ईश्वर सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान है, इसी कारण उसकी इस सम्पूर्ण सृष्टि और मनुष्य आदि सभी प्राणियों के शरीरों में ज्ञान विज्ञान की दृष्टि से पूर्णता, निर्दोषता सहित आदर्श रचना के गुण पाये जाते हैं। विज्ञान का एक नियम है कि संसार में जो मूल पदार्थ हैं वह अनादि व अनुत्पन्न हैं। अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती अपितु भाव से ही भाव की उत्पत्ति होती है। अत: सृष्टि के लिए ईश्वर, जड़ प्रकृति व इसके उपभोक्ता के नित्य, कारण व मूल अस्तित्व का होना आवश्यक है। इन मूल पदार्थों का विकार ही यह सृष्टि है। इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर भी अनादि, अजन्मा, अनुत्पन्न व अविनाशी सिद्ध होता है। वह सदा से है और सदा रहेगा। उसका अभाव कभी नहीं होगा। अब चूंकि उसका अस्तित्व अक्षुण है, अत: यह सृष्टि बनती व बिगड़ती अर्थात् इसकी समय समय पर ईश्वरीय सिद्धान्तों के अनुसार रचना और प्रलय और प्रलय के बाद पुन: रचना होती रहेगी। अब यदि अनन्त गुण वाले ईश्वर के मुख्य गुणों को एक माला में पिरोकर कहना हो तो इसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के शब्दों में इस प्रकार से कह सकते हैं 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।' इन सभी गुणों के कारण ही वह एकमात्र संसार के सभी लोगों का उपासनीय है। ईश्वर के यह सभी गुण व विशेषण सृष्टि में प्रत्यक्ष घट रहे हैं। अत: ईश्वर का यही सच्चा व स्वीकार्य स्वरूप है। वैज्ञानिक भी इसकी अवहेलना नहीं कर सकते। उन्हें भी तर्क, युक्ति व बुद्धि संगत होने से इस स्वरूप को

( शेष पृष्ठ 18 पर )

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

# आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा महाराष्ट्र द्वारा श्रद्धा से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आयोजित

## मुंशीराम से श्रद्धानन्द बनने से प्रेरणा लें- आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा महाराष्ट्र द्वारा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, औंध, पुणे में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में द्विदिवसीय कार्यक्रम **'उत्सर्ग उत्सव'** आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत हवन, विद्वानों का प्रवचन, सेवा प्रकल्प एवं आर्य विद्वानों का अभिनंदन किया गया। इस शुभ कार्य में महाराष्ट्र और गुजरात से आए हुए विशिष्ट आर्यजनों तथा 1200 शिक्षकगण, छात्रें एवं अभिभावकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 22 दिसंबर, 2016 को दीप प्रज्ज्वलन, डी.ए.वी. गान एवं भजन से हुआ।

डी.ए.वी. ठाणे तथा पनवेल के शिक्षक, शिक्षिकाओं ने स्वामी श्रद्धानंद के प्रति भजनों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। भजनों के उपरान्त वेद के प्रकाण्ड विद्वान और ओजस्वी वक्ता श्री वागीश शर्मा ने अपने प्रवचन द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री वागीश जी ने कहा कि श्रद्धा से किया गया कार्य आनंद प्रदान करता है। अपने प्रवचन में डॉ. वागीश ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन एवं कार्य पर प्रकाश डाला। आस्था और श्रद्धा में अंतर बताते हुए उन्होंने कहा कि सिर्फ आस्था के कारण नहीं बल्कि श्रद्धा के आधार पर तर्क द्वारा निष्पक्ष सोचकर बातों को स्वीकार करना चाहिए। अपने सुख के साथ-साथ दूसरों के सुख का भी ध्यान रखना चाहिए।

श्रीमती सी.वी. माधवी, मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, महाराष्ट्र में धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का आरंभ महायज्ञ के आयोजन से किया गया। इस महायज्ञ में प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणि सूरी जी, मुख्य यजमान थे। इस यज्ञ में श्री प्रबोध महाजन जी, उपप्रधान, श्री एस के शर्मा, महामंत्री, श्री सतपाल आर्य सहमंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली तथा श्रीमती जे. काकरिया, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश, श्री महेश चोपड़ा एवं श्री जोस कुरियन, प्रधान उपसभा महाराष्ट्र, एवं गुजरात तथा महाराष्ट्र के क्षेत्रीय निदेशक, प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं अन्य अतिथियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम महाराष्ट्र एवं गुजरात से पधारे आर्य विद्वानों तथा संन्यासियों का सम्मान किया गया। मान्य प्रधान जी ने 99 वर्षीय श्री स्वामी श्रद्धानंद का अभिनंदन करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

**(शेष पृष्ठ 19 पर)**

## टंकारा बोधोत्सव 2017

**हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार 23, 24, 25 फरवरी 2017 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।**

**निवेदक–रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री**

# ऐसा ये टंकारा है

**- महात्मा चैतन्यमुनि**

आर्यो का तीर्थ स्थान, ऐसा ये टंकारा है।
सारे संसार का, सारे संसार का...
आंखो का तारा है।.....

मूल ने था जन्म लिया, कुल को था धन्य किया।
दयानन्द बन करके, दयानन्द बन करके-
जग को निखारा है।......

मां-बाप का आंख का तारा, व्रत शिव का था धारा।
बोध जो उस रात हुआ, बोध जो उस रात हुआ-
भव से उतारा है।.......

बहना की मृत्यु देखी, चाचा की मृत्यु देखी।
मृत्युजंयी बनने का, मृत्युजंयी बनने का-
संकल्प ऐसा धारा है।.....

योग की पिपासा जागी, भोग की तृष्णा भागी।
शुद्ध 'चैतन्य' बनकर, शुद्ध 'चैतन्य' बनकर-
आत्मा को संवारा है।......

धन्य धरती माता हुई, कृपा बड़ी विधाता हुई।
दयानन्द जैसी योगी, दयानन्द जैसी योगी-
धरा पर उतारा है।......

वेदों का ज्ञान कराया, पाखण्डों का भूत भगाया।
स्वराज्य की दिशा दिखाई, स्वराज्य की दिशा दिखाई-
दहकता अंगारा है।.......

- महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी, हिमाचल प्रदेश

# महर्षि दयानन्द तुझको शत-शत नमन

**-ओम प्रकाश आर्य**

वेदज्ञान देकर हमें, जीवन किया निहाल।
ढोंग, रूढ़ि, पाखंड के काट दिए सब जाल।
**दयानन्द तुझको शतश नमन॥**
अन्धकार की वीथियाँ, सत्य मार्ग था लुप्त।
पराधीनता बेड़ियाँ स्वाभिमान सब सुप्त।
**जगाया दयानन्द तूने॥**
मुर्दो को थे पूजते, जिन्दों को दुत्कार।
सत्य श्राद्ध, तर्पण सभी, सिखलाया सत्कार।
**गिराया गढ़-पाखंडों को॥**
नारी नरक की खान थी, करती अश्रुपात।
देवी की संज्ञा दिया, मेट दिया आघात।
**पूज्या बना दिया तूने॥**
क्रान्ति-लहर उठने लगी, पढ़ सत्यार्थ प्रकाश।
फांसी-फन्दे चूमकर, किया दासता नाश।
**दयानन्द बलिहारी तुझको॥**

सत्यासत्य परिज्ञान था, कोसों हमसेदूर।
चमका वेदालोक में, मानव-मन का सूर।
**भास्कर दयानन्द तुम थे॥**
देवी, देव के नाम पर, हिंसा भरे थे काम।
भूत-प्रेत की भ्रांतियाँ, भयमय करतीं शाम।
**दयानन्द जड़े काट दी सब॥**
परमेश्वर के नाम पर, भटक रहे थे लोग।
सत्य स्वरूप बता दिया, हुआ प्रभु से योग।
**दयानन्द हम कृतज्ञ तेरा॥**
संध्या, हवन, संस्कार, जप का दे सच्चा ज्ञान।
ईश्वर, जीव, प्रकृति को, बता दिया कल्याण।
**हुआ आनन्दित जीवन यह॥**
इहलोक परलोक का, किया विवेचन सत्य।
भ्रांति-ग्रंथियाँ मिट गई, लुप्त हुआ असत्य।
**दयानन्द तुझको कोटि प्रणाम॥**

आर्य समाज रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)-323307

# आओ चलें ॠषि जन्म भूमि टंकारा

ऐसे उपकारी ऋषि की जन्म भूमि पर हम सब आर्यो को अपने जीवन काल में एक बार अवश्य आना चाहिए।

जिसने नारी शिक्षा/जागरण, बाल विवाह, विधवा विवाह, वेद पड़ने का अधिकार सबको, जैसे कई उपकार हैं। जिसका हम ऋण उतार नहीं सकते। ऐसे ऋषि के घर एक बार तो पधारें। प्रति वर्ष बोधोत्सव के अवसर पर विशाल ऋषि मेला टंकारा जन्म भूमि पर आयोजन किया जाता है।

मेरा उन सभी ऋषि भक्तों से विनम्र निमन्त्रण है कि जो अभी तक जन्मभूमि टंकारा नहीं पधारे वह आगामी 23, 24, 25 फरवरी 2017 को होने वाले ऋषि मेला (बोधोत्सव) में अवश्य पधारे। प्रतिदिन होने वाले सम्मेलनों में सम्मिलित हो, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करें। भारत के उच्च कोटि के संन्यासी/विद्वान/भजनोपदेशक इस उत्सव पर पधार रहें है। उनकी वाणी से निकले ज्ञान वर्धक प्रवचनों का लाभ उठा इस भूमि से प्रेरणा प्राप्त करें। **कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी इसी अंक में अन्य पृष्ठ पर पढ़े।**

**अजय** टंकारावाला

# मन की बात सुनें पर विवेक का फिल्टर लगाकर

❑ सीताराम गुप्ता

प्राय: कहा जाता है कि कोई भी कार्य करना हो तो पहले मन की बात सुनो। कोई भी उलझन हो तो दिल जो कहता है वही करो। दिल की बात मानकर कार्य करेंगे तो परिणाम अच्छा होगा और सफलता मिलेगी। मैं इस बात से पूर्णत: सहमत नहीं रहा इसलिए वर्षों इस पर चिंतन करता रहा। पिछले दिनों अचानक रोशनी की एक किरण दिखलाई पड़ी। एक दिन मैं अपने पौत्र के साथ पार्क में घूमने और उसे झूले झुलाने ले गया था। तभी वहाँ एक विदेशी युवती दिखलाई पड़ी जो अपने सवा-डेढ़ साल के पुत्र को झूला झुला रही थी। मैंने अनुमान लगाया कि वो रूसी है। मेरा सारा ध्यान उन पर केंद्रित हो गया। जैसे ही उसने अपने पुत्र से कुछ कहा मेरे मुँह से अनायास ही रूसी भाषा में निकला, ''अरे! आप रूसी है?'' उसके बाद उससे रूसी भाषा में ही बातचीत हुई।

मैं तीन दशक से भी ज़्यादा समय बाद किसी से रूसी भाषा में बात कर रहा था। मुझे स्वयं पर आश्चर्य भी हुआ कि मैं एकदम रूसी भाषा में बात कर रहा हूँ लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी क्योंकि मैंने साढ़े तीन दशक पूर्व अच्छी प्रकार से रूसी भाषा सीखी थी। वो अलग बात है कि प्रयोग में न आने के कारण वो अवचेतन या अचेतन मन की गहराइयों में लुप्त हो गई थी लेकिन जैसे ही अवसर मिला वो चेतन मन में प्रकट होने लगी। ऐसी बहुत सी चीज़ें हमारे मन की तहों में दबी पड़ी रहती हैं। लेकिन जब मैं किसी को जापानी, चीनी अथवा अन्य कोई भाषा जो मुझे नहीं आती बोलते सुनता हूँ तो ऐसा नहीं होता। न तो मुझे पता चलता है कि अमुक व्यक्ति वास्तव में कौन सी भाषा बोल रहा है और न मैं उसके साथ उसकी भाषा में बोल ही पाता हूँ। कारण स्पष्ट है और वो ये है कि मैंने ये भाषाएँ कभी सीखी ही नहीं। ये मेरे मन के अचेतन या अवचेतन मन का हिस्सा बनी ही नहीं अत: किसी भी रूप में इनके बाहर आने का प्रश्न ही नहीं उठता।

हमारा मन बिल्कुल एक कम्प्यूटर की तरह कार्य करता है। एक कम्प्यूटर की तरह ही उसमें जो डालते हैं उसी में से आवश्यकतानुसार बाहर आता है या बाहर लाया जा सकता है। अब प्रश्न उठता है कि मन की बात सुनने का क्या अर्थ हो सकता है? मन की बात सुनने का अर्थ यही है कि मन को खँगालकर उसमें से अपने हित की बात निकालना। हर व्यक्ति अपने मन की बात को ही सही ही नहीं सर्वोत्कृष्ट मानता है और उसे प्राथमिकता देता है। इसी के कारण द्वंद्व तथा वैमनस्य उत्पन्न होता है। किन्हीं दो या अधिक व्यक्तियों के मन की बात का परस्पर विरोधी होना और उससे द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होना सि) करता है कि हर व्यक्ति के मन की हर बात का कोई महत्त्व नहीं होता।

मन की बात में मन शब्द बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मन क्या है? वास्तव में मन हमारे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष अनुभवों का संग्रह मात्र है जिससे हमारी विचार-प्रक्रिया निर्धारित होती है। हमारा समग्र व्यक्तित्व वास्तव में हमारे इन्हीं अनुभवों और सोच का परिणाम है। हम अपने जीवन में जो कुछ भी अच्छा या बुरा सीखते हैं वो सब हमारे मन में संचित हो जाता है। जो अनुभव कभी काम में नहीं आते वो मन में बहुत गहरे में जाकर दफ्न हो जाते हैं। उनमें से कुछ अनुभव ज़्यादा गहरे में दफ्न होकर हमारे अचेतन मन का हिस्सा बन जाते हैं तो कुछ अनुभव कम गहरे में दफ्न होकर हमारे अवचेतन मन का हिस्सा बन जाते हैं। जब यही अनुभव हमारे चेतन मन में आते हैं अथवा चेतन मन में सप्रयास लाए जाते हैं तो हमारे मन की बात बन जाते हैं।

अब ये तो ज़रूरी नहीं कि हमारे सभी अनुभव अच्छे या बुरे अथवा उपयोगी या अनुपयोगी ही हों। कुछ अनुभव अच्छे हो सकते हैं तो कुछ बुरे भी लेकिन ये सभी अनुभव हमारे मन की संपत्ति बन जाते हैं। ये संचित अनुभव ही हमारे दिल की बात होते हैं। जब हम दिल की बात सुनने की बात करते हैं तो संभव है कि हम अपने निहित स्वर्थों के चलते ग़लत अनुभवों का चुनाव कर बैठें जिसके परिणामस्वरूप ग़लत कार्य करने को विवश हो जाएँ। हम कैसे निर्णय करें कि हमारे मन की बात सही है या नहीं? तो ऐसे में सही या ग़लत को जाने बिना मन की बात सुनने का क्या लाभ? जिस व्यक्ति के मन में केवल अनुपयोगी अथवा नकारात्मक विचार भरे हों वो कैसे किसी उपयोगी अथवा सकारात्मक विचार का चुनाव कर सकता है? जो व्यक्ति पक्षपातपूर्ण हो अथवा राग-द्वेष से भरा हो कैसे उसके मन की बात को महत्त्व दिया जा सकता है?

एक व्यक्ति जिसके मन में लालच भरा है कितनी ही मन की बात सुने वो लालच छोड़ नहीं सकता? यदि एक लालची व्यक्ति लालच छोड़ देता है तो ये उसके मन की बात कैसे हुई? एक चोर, लुटेरा, हत्यारा अथवा बलात्कारी भी अपने मन की बात सुनने के कारण ही चोरी, लूट, हत्या अथवा बलात्कार जैसे वीभत्स कार्य से विरत नहीं होता अपितु मन की बात सुनकर ही वो मज़े में चोरी, लूट, हत्या अथवा बलात्कार जैसे ग़लत कामों को अंजाम देता है। मन की आवाज़ पर ही कोई व्यक्ति लोक-कल्याण के कार्य करने के लिए आगे आकर अपना सारा जीवन लोगों के जीवन को स्वर्ग बनाने में लगा देता है तो मन की आवाज़ पर ही कोई कोईशासक छद्म लोक-कल्याण के नाम पर तानाशाह बन बैठता है और लोगों का जीवन नर्क बना डालता है।

पुरुषार्थ हो या अकर्मण्यता दोनों का ही चुनाव विचारों के वशीभूत होकर किया जाता है। जब तक किसी कार्य को करने का विचार न बने तब तक वह कार्य किया ही नहीं जा सकता और विचार मन की ही देन या उपज है। यही मन की बात सुनने की प्रक्रिया है। मन बहुत गड़बड़ करवा देता है अत: मन की बात सुनना सदैव हितकर ही हो ये संभव नहीं। यदि मन में संचित अच्छा अनुभव विचार रूप से कार्य रूप में परिणत हो जाए तो अच्छा परिणाम होगा अन्यथा बुरा व घातक परिणाम होने में संदेह नहीं। मन की बात सुनने से उत्पन्न घातक परिणामों से बचने के लिए मन की साधना या मन को साधना बहुत ज़रूरी है। कबीर की एक साखी है :

**मन के मते न चालिए मन के मते अनेक,**
**जो मन पर असवार है सो कोई साधु एक।**

हर स्थिति में केवल अपने मन के अनुसार चलना ठीक नहीं क्योंकि मन विविध मतों वाला होता है। उसमें न तो कोई स्थायित्व ही होता है और न एकरूपता ही होती है। हर व्यक्ति का मन अलग-अलग दिशाओं में जाता है। मन अलग-अलग तरह से सोचता है और अलग-अलग प्रकार से प्रतिक्रिया करता है। मन के विषय में कहा गया है कि वह संकल्पविकल्पात्मक है। उसमें परस्पर विरोधी भाव भरे रहते हैं। ऐसे में मन की बात मान लेना कई बार बहुत ही घातक हो सकता

है। जो मन की संकल्पविकल्पात्मक से मुक्त होकर, मन के पार होकर अथवा मन को नियंत्रित कर सही कार्य का चुनाव कर उसे संपन्न कर सके ऐसा व्यक्ति दुर्लभ होता है। जो ऐसा कर सके उसी की सोच उत्तम है और वही साधु है। ऐसे साधु के मन की बात ही उपयोगी व उत्तम हो सकती है।

हमारे मन रूपी कम्प्यूटर में जहा अधिकांश कूड़ा-कचरा भरा होता है हम उसमें से उपयोगी सामग्री या विचार कैसे निकालें यह बड़ा जटिल व महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। यहा हमें विवेकशील होने की ज़रूरत है। विवेक के द्वारा ही काल व स्थान के अनुसार उपयोगी व अनुपयोगी विचारों अथवा कार्यों में अंतर्भेद किया जा सकता है। विवेकी व्यक्ति ही सकारात्मक चिंतन द्वारा सही विचारों का चयन कर उन्हें कार्य रूप में परिणत कर सकता है। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सदैव अपना दृष्टिकोण सकारात्मक बनाए रखने पर ज़ोर दें। यदि हमारी सोच पूर्णत: सकारात्मक हो जाए तो सारी समस्याएँ ही समाप्त हो जाए। लेकिन प्राय: ऐसा संभव नहीं होता। इसीलिए विवेक अनिवार्य है। जिस प्रकार से हमारे अन्य सभी अनुभव हमारे मन के हवाले हो जाते हैं अथवा हम प्रयास करके उन्हें अपने मन के हवाले कर देते हैं उसी प्रकार से विवेकशीलता को भी मन के हवाले करना अथवा मन में विवेकशीलता की कंडीशनिंग करना भी अनिवार्य है। ध्यानावस्था में अथवा मन का शांत-स्थिर अवस्था में ले जाकर निम्नलिखित स्वीकारोक्तियाँ करने से ही हम सही अर्थों में मन की बात सुनने की कला का विकास कर पाएँगे:

- ❑ मैं अपने जीवन में केवल सकारात्मक व सर्वोपयोगी विचारों का ही चयन करता हूँ और उन्हें कार्य रूप में परिणत करता हूँ।
- ❑ मुझमें सकारात्मक व सर्वोपयोगी विचारों के चयन अथवा विवेक से कार्य करने की पूर्ण क्षमता है।
- ❑ मैं अपनी विवेकशीलता के प्रति पूर्णत: आश्वस्त हूँ और अपने मन की सही बात सुनकर पूर्ण विश्वास के साथ उसे कार्य रूप में परिणत करता हूँ।

ए डी-106-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-110034
फोन नं 09555622323, ईमेल: srgupta54@yahoo.co.in


# टंकारा समाचार
## के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

**'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।**

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**


**एक प्रेरणा**

# परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

**एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रूपये है।**

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**-: निवेदक :-**

**शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

# संगच्छध्वं

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

किसी भी राष्ट्र की आयु के संदर्भ में मात्र 67 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था ही कहा जा सकता है लेकिन बाल्यावस्था में ही किसी का इतनी भयावह बीमारियों से ग्रस्त हो जाना निश्चित रूप से चिंता उत्पन्न करता है। आज देश में व्याप्त बीमारियों क्षेत्रवाद, भाषावाद, सांप्रदायिकता, जातिवाद, संसाधानों के बंटवारे पर झगड़े, भ्रष्टाचार, प्राकृतिक संसाधानों की लूट, प्रकृति का अत्याधिक दोहन, आतंकवाद, नक्सलवाद, बेरोजगारी जैसी समस्याएँ राष्ट्र की इतनी छोटी आयु में दीमक की भांति लग गई हैं और राष्ट्र को अंदर ही अंदर खोखला कर रही हैं। ऐसी स्थिति में समाज राष्ट्र के प्रति लगाव रखने वाले सभी राष्ट्रवादियों जागरूक नागरिकों का परम दायित्व बन जाता है कि इन बीमारियों का इलाज करें अन्यथा इन व्याधियों से ग्रस्त हमारा राष्ट्र इस तथाकथित झूठी विकास की अवधारणा पर चलता हुआ विनाश को प्राप्त हो जायेगा। हमें इन बीमारियों के मुख्य कारण विकास की सम्मोहित करती झूठी अवधारणा के सम्मोहन को समझ कर तोड़ना होगा। आज इस विकास के नाम पर पाश्चात्य अंधानुकरण करते हुए आध्यात्मिक शिखर से बड़ी तेजी के साथ गहरी खाईयों की ओर फिसलते लुढ़कते जा रहे हैं। इस पाश्चात्य अंधानुकरण की झूठी चकाचौंधा में हमें अपनी दशा और दिशा दिखाई नहीं दे रही जैसे किसी वाहन की तीव्र रोशनी में हमें बाकी कुछ भी दिखाई नहीं देता। हम शिखर से खाईयों की ओर इतनी तेजी से फिसल रहे हैं कि इस गति के रोमांच को हम विकास की गति समझ रहे हैं। स्पीड थ्रिल्स बट किल्स जिन खाईयों की तरु हम तेजी से फिसल रहे हैं उन खाईयों में पहले से ही कई संस्कृतियों मिस्र, रोम, यूनान आदि के कंकाल अट्टाहस करते हुए आह्वान कर रहे हैं आओ तुम भी इन खाईयों में समा जाओ।

देश में व्याप्त व्याधियों के मूल कारण विकास की झूठी अवधारणा की दशा दिशा को समझ कर इसे ठीक करना होगा वर्ना आने वाली पीढ़ियां हमसे यह यक्ष प्रश्न पूछेगी कि संक्रमण के उस दौर में क्या आपने अपनी भूमिका का निर्वहन किया और उस समय हमारे पास जुए में हारे पांडवों की भांति चुपचाप सिर झुकाकर बैठे रहने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं होगा। यह भी कोई निश्चित नहीं कि इतनी गंभीर व्याधियों से ग्रस्त राष्ट्र की इस दुर्दशा के बाद हम स्वयं भी बच पायेंगे।

वर्तमान परिस्थिति में राष्ट्र के समक्ष सुरक्षा की भांति मुंह बाए खड़ी इन समस्याओं के निदान के लिए देश अंधो विकास के नाम पर चल रही पाश्चात्य अंधानुकरण भोगवाद की दशा और दिशा को समझकर इसे परिवर्तित करना होगा। इसके लिए हमें वैदिक आर्य विचारधारा में उपायों की खोज करनी पड़ेगी। ऋग्वेद के अंतिम मंडल तथा अथर्ववेद एवं तैतिरीय ब्राह्मण में संगठन सूक्त के नाम से सुप्रसिद्ध मंत्र के एक छोटे से अंश को समझने से भी कल्याण संभव है– **संगच्छधवं** – मिल कर चलो, **संवदधवं** – संवाद अर्थात आपस में प्रेमपूर्वक बातें करो **सं वो मनांसि जानताम्** – तुम्हारे मन मिलकर सत्य असत्य निर्णय के लिए सदा विचार किया करें।

देश में व्याप्त समस्याओं को समझकर उनके समाधान के लिए वेद भगवान ने इस संगठन सूक्त से आदेश दिया 'मिलकर चलो' अब प्रश्न उठता है कि मिलकर कैसे चले क्या आकाश में उड़ रही गिद्धों एवं चीलों की भांति किसी मरे हुए जानवर का भक्षण करने के लिए एक स्थान पर इकट्ठे हो जाने को ही 'मिल कर चलना' कहेंगे। शायद नहीं क्योंकि बुद्धिहीन प्राणियों द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए मिलना या झुंड बनाना 'समज' कहलाता है। मनुष्य तो एक सामाजिक प्राणी है और उसके लिए मिलकर चलने के लिए बुद्धिपूर्वक सोचविचार कर बनाई गई योजना से बना संगठन या समाज आवश्यक है। मननशील या विचारवान होना मनुष्य होने का प्रथम आवश्यक गुण है। अत: 'संगच्छधवं' मिल कर चलने के लिए प्रथम आवश्यकता है कि मनुष्य विचार करते हुए योजना बनाकर श्रेष्ठ लोगों के समान अर्थात आर्य समाज का गठन करके मिल कर चलें।

अब दूसरा प्रश्न उठता है कि 'मिल कर चलना' किधर है इसके लिए हमें अपने अर्थात मनुष्य के जीवन के उद्देश्य को समझना होगा। क्या मनुष्य के जीवन का उद्देश्य ईश्वर द्वारा हमारे उपयोग के लिए प्रदत्त साधान अर्थात शरीर के सुख के साधान एकत्रित करना है। यदि हम केवल ऐसा ही समझते हैं तोؘायद हमारी स्थिति 'साधान आधीन' हो जाने वाला है जो कि पराधीन से भी बदतर है और जीवन यात्रा में दुर्घटना को अवश्यंभावी बना देती है। यह ठीक है कि साधक द्वारा साधना के लिए साधन का ठीक होना साध्य अर्थात उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है। हम इस साध्य अर्थात उद्देश्य प्राप्ति के लिए साधान एकत्रित करने के लिए क्या करें। तो इस प्रश्न का उत्तर यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मंत्र में मिलता है 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' अर्थात समस्त ऐश्वर्य प्रदान करने वाले परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त प्रकृति के साधानों का त्यागपूर्वक भोग वा उपयोग करें।

लेकिन इन साधानों को पाकर भी चलने की दिशा का प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है इसके लिए हमें अपने लक्ष्य वा उद्देश्य को समझना होगा केवल मनुष्य जीवन ही ऐसा है जो कि भोग के साथ साथ कर्म योनि भी है और मनुष्य के जीवन का वास्तविक उद्देश्य साधक द्वारा साधान का उपयोग करते हुए साधय की प्राप्ति है इसी को उपासना भी कहा जाता है इस में जब साधक और साध्य एकरूप होकर मनुष्य का आत्मा मोक्ष को प्राप्त कर परम आनंद की अवस्था में आ जाता है इस मोक्ष प्राप्ति को ही मनुष्य को श्रेय मार्ग अथवा धर्म मार्ग पर चलना होता है। धर्म प्र यज्ञ: अर्थात धर्म पर चलने के इस योग मार्ग पर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होते हुए संसार के समस्त श्रेष्ठ पुरूषों के साथ संसार के वैचारिक दृष्टि से महानतम संगठन आर्यसमाज के साथ पुरातन सनातन वैदिक आर्य विचारधारा के मार्ग पर चलना चाहिए तभी हम कह पायेंगे 'संगच्छधवं' और भोग मार्ग को छोड़कर योग मार्ग पर चलकर निस्वार्थ भाव से परोपकार कार्य त्यागपूर्वक साधनों का उपयोग करते हुए अपने मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति कर पायेंगे और कह पायेंगे 'संगच्छधवं' ।

–602 जी एच 53, सैक्टर 20 पंचकूला, मो. 9467608686

**टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर**
**श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**
**www.tankara.com**
**पर उपलब्ध है**

# वैदिक विद्वान डॉ. धर्मवीर तथा कुछ आर्ष-संदर्भ

❒ प्रो. डॉ. श्याम सिंह शशि

बचपन में कभी पढ़ा था-**''धृति क्षमा दमोअस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः/धीरर्विद्या सत्य क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।''** मनु का यह कथन वैदिक विद्वान आचार्य धर्मवीर पर पूर्णतया चरितार्थ होता है। डाक्टरेट सहित अनेक उपाधियों से समलंकृत धर्मवीर निश्चय ही एक आदर्श मनीषी, वेद तथा अन्य आर्षग्रन्थों के संदेश-वाहक थे। उन्होंने 'परोपकारी' के माध्यम से न केवल अपनी लेखनी को पावन-स्वरूपा प्रतिष्ठित किया, प्रत्युत प्रवचनों से लेकर मीडिया तक पर अपनी मधुर वाणी का सदुपयोग करते रहे। वे सचमुच, मनसा-वाचा, कर्मणा अपने नाम के अनुरूप थे।

उक्त संदर्भ में आर्य समाज के कतिपय प्रतिष्ठित लेखक, शोध, चिंतन तथा पठन-पाठन में साधना-रात व्यक्तित्व मेरे मानस-पटल पर चलचित्र की तरह आ-जा रहे हैं। मेरे पास संस्मरणों का आँखों देखा इतिहास है जिसे यहाँ प्रस्तुत करना संभव नहीं है। अलबत्ता, महर्षि दयानन्द का विश्व-ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' सात्विक मित्र बनकर सदैव साथ रहा, कर्त्तव्य-पथ को प्रशस्त करता रहा तथा भटकते मन को दिशा देता रहा।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के समीपस्थ स्वतन्त्रता-सेनानियों का मेरा ग्रामीण परिवेश 'कृण्वंतो विश्व आर्यम्' का यात्रा-पथ दे गया था जिसमें अपनी विश्व-यात्राओं में निष्काम भाव से जीता रहा। यात्रा-पथ हिमालय-पुरुष पंडित धर्मदेव शास्त्री के सानिध्य से प्रारंभ होता है-उत्तराखंड में उनके अशोक आश्रम कालसी से लेकर यायावर समुदायों तक पर शोध। कश्मीर, वृहत्तर पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात के अनेक जनजातीय कबीले, अंडमान निकोबार के जारवा, नागालैंड के नागा और फिर विश्व के यायावर भारतवंश रोमा तथा मारिशस व विश्व के अन्य प्रवासी भारतीय। समाज में भ्रमण पिछहत्तर देशों की अनुसंधान-यात्राओं में भारतेन्द्रनाथीजी (वेदभिक्षु) के दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित 'द ग्रेट गायत्री' आदि को भेंट-स्वरूप वितरणार्थ अपने साथ ले जाता रहा। यह सब लिखना अब बेमानी लगने लगा है क्योंकि अब न तो 'आर्यजगत' के सम्पादक क्षितीश वेदालंकार रहे जो मेरी शोध-लेखनी से आर्ष आलेख लिखने का अनुरोध किया करते थे। उन्होंने 'हिन्दुस्तान' (दैनिक) समाचार पत्र में संपादन कार्य करते हुए भी मेरी अनेक रचनाएं प्रकाशित की थी। उनके साथ बिताए क्षण जहाँ एक असीम अनुभूति दे जाते हैं वहाँ आज के समाचार पत्रों में सत-साहित्य के प्रति उदासीनता का भाव कई कष्टप्रद प्रश्न खड़े करता है। मीडिया यद्यपि कभी वरदान था जो अब टीआरपी के कारण अभिशाप भी बन गया है। कभी समाचार व मनोरंजन-जगत पर इक्के-दुक्के डीडी चैनलों का प्रभुत्व था, जिनका सरोकर स्वस्थ समाज का निर्माण होता था। अतः मेरे जैसा 'वेजिटेरियन' लेखक भी अनेक कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाता रहा। साहित्यकार डॉ. अमरनाथ 'अमर' और उनकी सहयोगी श्रीमती कुंकम जोशी ने 21 नवम्बर 2016 को एक घंटे का इंटरव्यू लेकर पुरानी स्मृतियों को सजग कर दिया जिसमें मेरे महाकाव्य 'अग्निसागर' के कुछ अंश भी सम्मिलित थे। 'अग्निसागर' पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य किए गए। शोधार्थियों को पी.एच.डी., डी.फिल आदि उपाधियां मिली। वस्तुतः यह कृति जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी', 'विश्वम्भरा', वेदवेदांग, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश से लेकर डॉ. अम्बेडकर तक विचारधारा को प्रक्षेपों के परिप्रेक्ष्य में समाहित करती है। एक समाज-दर्शन देती है जिसे वर्ष 1993 में 'अग्निसागर' धारावाहिक के माध्यम से दूरदर्शन पर दस ऐपिसोड्स में दिखाया गया था। प्रक्षेप-रहित इस कृति में 'मनुस्मृति' में वर्णित धर्म के दस लक्षण भी हैं। एक मुस्लिम शोध छात्र को उस पर पी.एच.डी. की उपाधि अजमेर विश्वविद्यालय से मिली तो धर्मवीर जी अत्यंत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने कहा था कि 'अग्निसागर' पर शोध के लिए छात्र ने मनुस्मृति व आर्ष ग्रंथ पढ़े थे।

दिवंगत डॉ. धर्मवीर पर कुछ लिखने के बहाने अन्य अग्रज और अनुज याद आ रहे हैं। वाग्वीर पं. प्रकाशवीर शास्त्री के ओजस्वी भाषण किशोरावस्था में सुनकर व्याख्यान-कला को थोड़ा बहुत सीखा। यौवन की देहरी पर दिल्ली मिल गई। आर्य समाज किदवई नगर का मन्त्री भी रहा। आर्य समाज मन्दिर बनवाया। तभी आर्यपीठ की स्थापना भी की थी जिसके अध्यक्ष पं. रघुवीर शास्त्री तथा जगन्नाथ जी आदि सहयोगी थे। सोचता हूँ, आज रोमा सर्बिया/अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बेलग्रेड सर्बिया के कुलाधिपति का कार्यभार वहन करना कहीं उसी वैदिक यात्रा-पथ की चरम परिणति तो नहीं। यह बात मैंने दिवंगत धर्मवीरजी, उनकी सास-माता पंडिता राकेश रानी, और नोबेल पुरस्कार-विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी व अग्रज श्री बनारसी सिंह के साथ भी कभी साझा की थी। डॉ. धर्मवीर जी द्वारा सोशल मीडिया यूट्यूब आदि कर दिए गए प्रवचन यदि आर्य समाज के किसी स्वतन्त्र टी.वी. चैनल पर होते तथा अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में दूसरे वैदिक वक्ताओं द्वारा भी प्रसारित होते तो महर्षि दयानन्द का संदेश स्वामी विवेकानन्द की तरह विश्व व्यापी बनता। (दै.सभ्यता संस्कृति 2016 दिसम्बर अंक में अंग्रेजी में छपा, वसुधैव, कुटुम्बम, विश्व शांति और आर्षपथ को प्रशस्त करता हुआ। मैंने दयानन्द संस्थान के किसी वार्षिकोत्सव में धर्मवीर जी से कहा था-आर्य समाज को वेदों का संदेश मीडिया के द्वारा जन-जन तक पहुंचाना है जिसे वे यथाशक्ति संप्रेषित करते रहे। महाशय धर्मपाल जी, डॉ. महेश विद्यालंकार, दुर्गा जी श्री विनय आर्य तथा अन्य बंधु इस कार्य की गति प्रदान कर रहे हैं। टी.वी. चैनलों अथवा सोशल मीडिया आदि पर और अधिक सक्रियता की आवश्यकता है। शेष फिर कभी। (हिन्दी, अंग्रेजी साहित्य में 1990 में पदम्श्री से सम्मानित दो भाषाओं में पांच सौ पुस्तकों के लेखक, डॉ. शशि के व्यक्तित्व व कृतित्व पर मारवाह स्टुडियो द्वारा प्रसारित यू टयूब पर अंग्रेजी में डॉक्युमेटरी, हिन्दी में पुस्तक चर्चा साक्षात्कार व गूगल आदि।

## अनाग्रही सत्य को प्राप्त करता है

एक चींटी नमक के पर्वत पर रहती थी और दूसरी चीनी के पर्वत पर। एक दिन दोनों मिली। बातचीत में नामक के पर्वत पर रहने वाली चींटी ने कहा-मेरा मुख निरन्तर खारा रहता है। दूसरी चींटी ने कहा-मेरे घर चलो। वहाँ सब कुछ मीठा है। वह उसके साथ चली गई। वहाँ भी वह बोली-मेरा मुँह तो खारा ही है। दूसरी चींटी ने कहा-मुख में विद्यमान नमक के कणों को नहीं छोड़ा तो कैसे मधुरता की अनुभूति होगी? आग्रह के लवण कणों को मुख में धारण करता हुआ मनुष्य क्या कहीं भी सत्य रस का आस्वाद लेने में समर्थ हो सकता है।

# तब और अब

**❒ ओमप्रकाश बजाज**

हमारे ही देश में एक वह भी समय था जब पढ़ाने वाले और पढ़ने वालों के बीच गुरु शिष्य का पवित्र रिश्ता होता था। गुरु का स्थान माता-पिता से भी ऊंचा माना जाता था। बहुत पुरानी बात को जाने भी दें तो भी स्वाधीनता प्राप्ति से पहले तक स्थिति नितांत भिन्न थी। आज भी पुराने लोग अपने समय के स्कूल कॉलिज के दिनों को याद करके इस बात की पुष्टि करने में नहीं हिचकिचाएंगे। हमारे यहां 1947 के बाद से ही शिक्षा की नीति पर विचार विमर्श चलता चला आ रहा है। भांति भांति के प्रयोग होते आए हैं, हो रहे हैं, पुरानी शैली को दरकिनार कर दिया गया। नई पुख्ता कोई बन नहीं पायी। हालत यह है कि न इधर के रहे हैं न उधर के। प्रदेश अपनी मनमर्जी से, जब जैसी सरकार होती है, परिवर्तन कर डालते हैं। बेशक अच्छी भावना से, अच्छे के लिए लिए, किन्तु कुछ भी अच्छा सामने दिखाई नहीं पड़ता, कभी कहीं अंग्रेजी हटा दी जाती है। कभी पुनः लागू कर दी जाती है, कहीं त्रि-भाषायी फारमूला जारी हो जाता है। फिर अचानक वह समाप्त कर दिया जाता है। बेचारे बच्चे विषयों की भरमार तथा बस्ते के नित बढ़ते भार से हलकान परेशान रहते हैं। आज टयूशन के बिना पढ़ाई सम्भव ही नहीं रही। वह भी हर विषय के लिए अलग-अलग टयूटर। अलग-अलग दिशा में अलग-अलग दूरी पर। बेचारा बच्चा चक्करघिन्नी बना रहता है। हमने अपने बच्चों से उनका बचपन ही छीन लिया है। उन्हें खेलने कूदने का हो अवसर ही नहीं मिल पाता। अपनी करनी का दोष हम मासूम बच्चों के सिर मंढ़ने से जरा भी नहीं हिचकते। उन्हें उच्छंखल की संज्ञा दे देते है। स्कूल टीचर्ज से पढ़ाने के अतिरिक्त हर संभव काम लेना आम बात है। हमारे कर्णधारों को इसमें कुछ भी अजीब नहीं लगता। शारीरिक दण्ड देना अपराध बना दिया गया है। बेचारे शिक्षक शिक्षिकाएं समझ नहीं पाते कि उदण्ड छात्रों को वे सम्भालें तो कैसे? स्थिति विस्फोटक हो चली है मगर हमारे शिक्षाशास्त्री खरगोश की नींद सो रहे हैं। स्कूलों कालिजों में शिक्षक पढ़ाने से इतर पॉलिटिक्स में अधिक व्यस्त नजर आते हैं। उन्हें संस्थान में पढ़ज़ने से कहीं अधिक ट्यूशन पढ़ाने में रूचि रहती है। किसी ने क्या खूब कहा है कि ''आज पढ़ने वाले पढ़ाने वाले के बीच मात्र इतना रिश्ता है कि छात्र फीस देता है और शिक्षक पगार लेता है।'' कुछ ही समय पहले राजधानी दिल्ली के एक स्कूल में दो छात्रों ने दिन दिहाड़ अपने ही क्लास टीचर की चाकुओं से गोद कर हत्या कर दी। एक शाइर ने आज के हालात का इन शब्दों में जायजा लिया था:-

**''वह बाद-ए-खुदा दर्जा उस्ताद को देते थे।**
**उस्तानी का अगवा भी अब तो है रवा करना।''**

एक समय था कि डाक्टर हकीम वैद्य का स्थान हमारे मन में भगवान के बाद रहता था। डाक्टर को अपनी परेशानी बताने भर से आधी बीमारी जैसे दूर हो जाती थी। तब डाक्टर पर विश्वास होता था। आज डाक्टरी एक पुण्य का काम नहीं मात्र धंधा बन चुका है। पैसा कमाना भर ही एक मात्र उद्देश्य रह गया है। आंखों देखी बता रहा हूं। डाक्टर साहिब आला एक को लगा रहे हैं, नब्ज दूसरे की पकड़े हैं, हकीकत तीसरे की सुन रहे हैं, नुस्खा चौथे का लिख रहे हैं। मन में आया कि हे भगवान तू ने इन्हें चार हाथ क्यों न दिये। हर डाक्टर के यहां भीड़ ही भीड़ उनकी तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती जा रही है। इनकी फीस! बस खुदा की पनाह। हर बार जाने बढ़ी हुई मिलती है। भांति भांति के टैस्ट लिखना सामान्य बात है। याद आती है पुराने दिनों की जब डॉक्टर साहिब अपने अनुभव से रोग का निदान कर लेते थे। तब जगह-जगह पैथालिजकल लैब्ज कहां नजर आते थे। टैस्टों के बारे में अनेक बातें कही सुनी जाती है। कि इनमें लिखने वाले डाक्टर का परसनटेज बंधा होता है। नई-नई महंगी से महंगी दवाइयां लिखना तो आम बात है। ढेरों मैडीकल रिपरिजैन्टेटिव तथा उनका पूरा का पूरा ढांचा इसी पर तो टिका रहता है। कहा जाता है कि डाक्टरों को फारिन दूर तक कीमती तोहफे दे दे कर हर कम्पनी अपनी नई दवाइयां लिखने को प्रेरित और प्रोत्साहित करती है। मध्यप्रदेश का व्यापम घोटाला कुछ समय से चर्चा में है। अकसर खबरों में आता रहता है। लाखों रूपये ले कर मैडीकल भरती परीक्षा में नकली अभ्यार्थी बिठा कर पास करवाना वह भी बहुत बड़ा संख्या में। अब भला कैसे पता चले कि यह डाक्टर असली है या घोटाले की पैदावार। अनुसूचित जाति वालों को तो आरक्षण के अंतरगत काफी कम प्रतिशत से सफल घोषित करना ही होता है। वैसे भी डाक्टरी पढ़ाना कोई आसान काम नहीं है। फीसें ही लाखों में होती है। कई-कई साल की पढ़ाई का खर्चा। फिर आज मात्र एम.बी.बी.एस. कर लेने से तो काम नहीं चलता। पोस्ट ग्रेजुएशन, सपेशेलाइजेशन जरूरी ही है। फिर बंगला, कार, तामझाम भी आवश्यक होते है। डाक्टर दम्पति अपने बच्चों को भी डाक्टर ही बनाना चाहते हैं ताकि धंधा पीढ़ी दर पीढ़ी चलता चला जाय। इस सबके लिए पैसा अथाह पैसा पहली जरूरत है ही।

मगर सब कुछ नकारात्मक ही हो, ऐसा भी नहीं है। आज भी ऐसे डाक्टर हैं जो अपने पेशे के प्रति समर्पित है। डॉक्टरी पास करते समय ली गई शपथ को भूले नहीं है। मैं जबलपुर के एक डाक्टर साहिब को जानता हूं जो मात्र 2 रूपये फीस वर्षो तक लेते रहे। लोगों के बार-बार जिद करने पर रूपये 3/- रूपये किये। आज भी मह 10/- लेते हैं। चिल्लर की कमी के कारण, जबकि लगभग 80 प्रतिशत केसों में ब्लडप्रेशर भी चैक करते हैं। बहुत कुछ बिगड़ा है मगर सब कुछ नहीं बिगड़ा आज भी ऐसे अपवाद मौजूद हैं जो कहते ही नहीं मानते भी है कि "I treat He cures".

- पोस्ट बॉक्स 595, जी.पी.ओ. इंदौर (मध्य प्रदेशा)-452001
फोन: 0731-2593443, मो.: 09826496975

## टंकारा की ऋषि भूमि

टंकारा की ऋषि भूमि, कर रही है पुकार।
बोधोत्सव पर दौड़े आओ, आर्यो होकर तैयार।।
दयानन्द की जन्मभूमि यह पधारो यहां शिवरात्रि में।
सच्चे शिव का बोध हुआ यहां, स्वामी जी को बोधरात्रि में।
टंकारा के गोद में खेलकर स्वामी दयानन्द यहां युवा हुए।
वेद का हिन्दी में भाष्य करके, विश्व में स्व. प्रतिभा प्रकाशित किये।
टंकारा की भूमि को ऋषि ने आर्यो के तीर्थ से विभूषित किया।
स्वयं विष का पान करके, औरों को अमृत का दान दिया।
टंकारा का समाचार जानो, यहां की पुण्य स्थली में पधारकर।
ऋषि दयानन्द के गुण धारण करो, ऋषि जीवन को सुन व सुनाकर।।

- स्वामी शांतानन्द सरस्वती, वैदिक गुरुकुल भवानीपुर, कच्छ गुजरात

# ईश्वर और वेद सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

**प्रश्न:** सूर्य, चन्द्र, पर्वत, समुद्र आदि संसार की वस्तुओं को किसने बनाया है?

**उत्तर:** ईश्वर ने

**प्रश्न:** क्या इन चीजों को कोई मनुष्य व अन्य प्राणी बना सकता है?

**उत्तर**-कभी नहीं। किसी भी प्राणी में यह शक्ति नहीं कि इन आश्चर्य जनक चीजों को बना सके।

**प्रश्न:** ईश्वर का रूप कैसा है, और वह कहाँ रहता है, क्या हम उसे आँखों से देख सकते हैं?

**उत्तर:** ईश्वर सब व्यापक है, कोई ऐसी चीज व ऐसी जगह नहीं जिसके अन्दर वह न हो, उसका कोई रूप और शरीर नहीं है, इसलिए हम उसे कभी नहीं देख सकते।

**प्रश्न:** क्या ईश्वर हमारे अन्दर भी है।

**उत्तर:** हाँ! ईश्वर हमारे अन्दर बाहर, ऊपर नीचे चारों ओर हैं। हमें इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए और सदा याद रखना चाहिए।

**प्रश्न:** हम बात को याद रखने से क्या लाभ है।

**उत्तर:** यदि हम इस बात को सदा याद रखें कि परमेश्वर सब जगह है और सब कुछ जानता है तो हम कभी बुरे काम नहीं कर सकते। कभी बुरा विचार तक मन में नहीं ला सकते। जब ईश्वर-इस सारे संसार का राजा-हमें सब जगह देखने वाला है, तो हम कैसे झूठ बोल सकते हैं? कैसे चोरी कर सकते हैं? कैसे धोखा दे सकते हैं? और कैसे दुराचार कर सकते है? इतना ही नहीं, बल्कि इन बुरे कामों के करने का विचार तक कैसे मन में ला सकते हैं? इसलिए धर्म की सबसे बड़ी भिक्षा यही है कि ईश्वर को हम सब जगह व्यापक मानकर बुरे कामों से सदा दूर रहें। इसीलिए वेद में बताया है।

''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत्'' यजु. 040/2

अर्थात् इस सारे संसार में सब पदार्थो में ईश्वर व्यापक है।

**प्रश्न:** ईश्वर कितने हैं?

**उत्तर:**- ईश्वर एक ही है, जो सब जगह व्यापक, सब कुछ जाननेवाला और सर्वशक्तिमान है। वेद में उपदेश- ''य एक इत् तमुष्टुहि'' ऋग्वेद 6.45.6। जो परमेश्वर एक ही है, इसी को, हे मनुष्य! तू सदा स्तुति व उपासना कर। उपनिषद् का वचन भी याद रखो-एको देव: सर्वभूतेषु गूढ़: सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा। श्वेताश्वतर उप अर्थ परमेश्वर एक ही है, वह सब प्राणियों के अन्दर छिपा हुआ है, वह सर्वव्यापक और सब प्राणियों की आत्मा के भीतर विद्यमान है।

**प्रश्न:** वेद किसको कहते हैं?

**उत्तर:** वेद शब्द का अर्थ-ज्ञान है।

**प्रश्न:** वेद कितने हैं और उनमें क्या बतलाया गया है।

**उत्तर:** वेद चार है, जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। मनुष्यों को किस तरह के काम करने चाहिए, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति कैसे हो सकती है, तथा संसार में शान्ति कैसे रह सकती है, ईश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए, इत्यादि सब बातें वेदों में बताई गई हैं। उनसे सबको लाभ कैसे पहुँच सकता है? यह भी बताया है।

**प्रश्न:** वेदों का ज्ञान किसने और क्यों दिया?

उत्तर: वेदों का ज्ञान ईश्वर ने दिया, जो सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानने वाला है। उसने यह ज्ञान इसलिए दिया कि सबको सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त हो सके। ईश्वर माता-पिता के समान हम सब पर दया करने वाला है। जैसे माता-पिता बच्चों की भलाई के लिए उन्हें अच्छी बातें सिखाते हैं, वैसे ही हम सबके परम पिता और दयालु माता ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान दिया, क्योंकि वह हम सबकी भलाई चाहता है।

**प्रश्न:** वेदों का ज्ञान ईश्वर ने कब दिया?

**उत्तर:** यह ज्ञान ईश्वर ने मनुष्य सृष्टि के आरम्भ में दिया। यदि बाद में देता तो पूर्व सृष्टि उसके लाभ से वंचित रह जाती।

**प्रश्न:** वेदों का ज्ञान ईश्वर ने क्यों और किसको दिया?

**उत्तर:** वेदों का ज्ञान ईश्वर ने मनुष्य सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों को दिया। क्योंकि वे उस ज्ञान के बिना कुछ नहीं सीख सकते थे और न सिखा सकते थे। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सिखाने से सीखता है। जबतक हमें कोई सिखलाने वाला न हो तब तक हम कुछ भी लिखना पढ़ना नहीं सीख सकते। सृष्टि के आरम्भ में सिवाय ईश्वर के कौन मनुष्यों को उपदेश देता। हमें क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए, हमने वेदों से ही सीखा है। जिनको मनुष्य सृष्टि के आरम्भ में जिन चार ऋषियों को ईश्वर ने वेद-ज्ञान दिया उनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे।

**प्रश्न:** क्या ईश्वर ने कागज, कलम और स्याही लेकर लिख दिया अथवा वह वेद-ज्ञान उन्हें कैसे दिया?

**उत्तर:** ईश्वर सब के अन्दर व्यापक है। उन ऋषियों के हृदय पवित्र थे। ईश्वर ने उनके हृदयों में वेदों का ज्ञान भर दिया। ईश्वर, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान होने के कारण न उसे कागज, कलम, स्याही ही जरूरत है और न मुँह से बोलने की। बस हृदयों में प्रेरणा देना ज्ञान भरने के लिए पर्याप्त है।

**प्रश्न:** क्या ईश्वर का ज्ञान बदलता रहता है।

**उत्तर:** नहीं! ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस अर्थात् ठीक वैसा ही बना रहता है। उसे अपना ज्ञान बदलने की कोई जरूरत नहीं होती।

**प्रश्न:** क्या वेद किसी विशेष जाति व देश के मनुष्यों के लिए है?

**उत्तर:** नहीं! वे सारे संसार के मनुष्यों के लिए है, क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य यही है कि सब प्राणी सुखी हो सकें। ईश्वर सारे संसार का पिता है, न कि किसी विशेष जाति व देश के लोगों का। इसलिए वेद पढ़ने का अधिकार उन सब मनुष्यों को है जो अच्छा बनना चाहते हैं। यही बात वेदों इसलिए वेद पढ़ने का अधिकार उन सब मनुष्यों को है जो अच्छा बनना चाहते हैं। यही बात वेदों में स्वयं ईश्वर ने बताई है:

यथेमां वाचं कल्याणी आवदानि जनेभ्य:।

ब्रह्म राजन्या भ्यां शूद्राय चार्याय चारणाय च स्वाय। यजु. 26./2।

इसका अर्थ यह है कि सबकी भलाई करने वाले वेद ज्ञान को मैंने सारे मनुष्यों के कल्याण के लिया दिया है। इसलिए महर्षि दयानन्द की इस आज्ञा को कभी न भूलो और सदा वेद का स्वाध्याय किया करो-''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदों का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

यह लेख मैंने ''वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी'' नामक लघु पुस्तिका से उद्घृत किया है। मेरा उद्देश्य प्रत्येक विज्ञ पाठक को ईश्वर और वेदों सम्बन्धी अधिक से अधिक जानकारी बन सके और अपने ज्ञान को अधिक से अधिक बढ़ाकर जीवन में सुख व शान्ति प्राप्त कर सके, इसलिए लिखा है। कृपया इसका पूरा लाभ उठायें।

- गोविन्दराम आर्य अण्ड सन्स 180 महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकता-700007

# परमात्मा की चिट्ठी आत्मा के नाम

❐ डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

अत्र कुशलं तत्रास्तु। यहाँ अखिल भुवन मंडल में सब कुशल मंगल हैं। आशा है, तुम भी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से स्वस्थ एवं प्रसन्न होगे। तुम्हें युग-युगान्तरों के बाद पत्र डाल रहा हूँ। इसका भी विशेष कारण है कि कहीं तुम्हारी मेरे प्रति अनास्था न हो जाय। मैं मानता हूँ कि तुम जन्म-जन्मान्तरों से भजन, भक्ति, साधना, संन्ध्या, हवन आदि के रूप में मुझे चिट्ठियां लिखते रहे हो, परन्तु मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। अतः तुम्हारी अनास्था, भ्रान्ति तथा आशंका को दूर करने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ।

मेरे प्यारे शाश्वत बेटे, मुझे तुम्हारी हर चिट्ठी बराबर मिलती रही है। पर जानते हो, मैंने तुम्हारी चिट्ठी का जवाब क्यों नहीं दिया? दरअसल जिस ढंग से तुम पत्र का उत्तर चाहते हो, मैं उस ढंग से उत्तर दे ही नहीं सकता। मेरा स्वरूप ही ऐसा है कि मैं तुम्हारे प्रार्थनामय पत्र का उत्तर देने के लिए साकार नहीं हो सकता। निराकर होने में ही मेरा स्वरूप सन्निहित है। तुमने मेरे बारे में पढ़ा ही होगा-**'अपाणि पादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षु स श्रृण्योत्यकर्णः'** अर्थात् मैं हाथ-पैर के बिना भी कर्म कर सकता हूँ, बिना नेत्र के भी देख सकता हूँ तथा कान के बिना भी सुन सकता हूँ। अतः तुम समझ ही गए होंगे कि आँख के बिना भी तुम्हारी चिट्ठी पढ़ सकता हूँ।

मेरे लाडले! कई बार तुमने अत्यधिक आस्थावश मुझे दर्शन देने के लिए प्रार्थना की लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि स्थूल के ही दर्शन किए जा सकते हैं और मैं हूँ अणु से भी सूक्ष्म-**'अणोरणीयान् महतो महीयान्'।** दर्शन तो किसी प्रतिमा के किए जा सकते हैं पर मेरे बारे में वेद मन्त्र कहते हैं-**'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः'** अतः मैं दर्शन का नहीं, अनुभव का विषय हूँ। तुम यों समझ लो कि ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति ही प्रभु की प्राप्ति है। मेरा स्वरूप ही आनन्दय है। क्या तुम्हें आर्यसमाज का दूसरा नियम याद नहीं? 'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकर....' और भी सुनो, तुम यह मत समझ लेना कि साकार होने से मैं अधिक सशक्त हो जाऊँगा, लेकिन तुम भूल जाते हो कि मुझ निराकर ईश्वर में तीन शक्तियाँ हमेशा ही विद्यमान रहती हैं-'स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च' अर्थात् ज्ञान, बल और क्रिया मुझ ईश्वर की स्वाभाविक शक्तियाँ हैं। अतः इन्द्रिय विहीन होना या साकार न होना, मेरे सर्वशक्तिमान् स्वरूप में किसी प्रकार बाधक नहीं है।

मेरे ही प्रतिरूप मेरे सुत, कई बार तुम शंकालु बन जाते हो, मेरी सत्ता पर ही सन्देह कर बैठते हो और सोचने लगते हो कि जिस ईश्वर के दर्शन नहीं होते, जिसका स्थूल या भौतिक अस्तित्व नहीं, वह शुभाशुभ कर्मो का फल कैसे देगा? लेकिन तुम्हें पता नहीं कि कई बार मैं तुम्हारे शुभाशुभ कर्मो का तत्काल फल देता हूँ। तुमने देखा होगा किसी कार्य को कर के तुम्हें बहुत प्रसन्नता होती है और किसी कार्य को करके ग्लानि होती है। यह प्रसन्नता और ग्लानि मेरे द्वारा ही फल रूप में प्रदान की जाती है। क्योंकि मैं प्रतिपल तुम्हारे हृदय में ही रहता हूँ-**'ईश्वरःसर्वभूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठति।'**

मेरे अल्पज्ञ बेटे, कई बार अल्प ज्ञान के कारण तुम अपने आपको और मुझे एक मान बैठते हो और कह उठते हो-**'अहं ब्रह्मास्मि'** लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि 'तुम ''मैं'' नहीं बन सकते, क्योंकि हम दोनों का स्वरूव कुछ बातों में भिन्न भी है। जानना चाहेगे मेरा स्वरूप? मेरा स्वरूप है-**'क्लेश कर्म विपाकाशयैरपरामृष्ठः पुरूश विशेषः ईश्वरः'** अर्थात् मैं क्लेश और कर्मफल से अछूता हूँ। अब तुम पूछोगे कि ये क्लेश क्या हैं? तो सुनो, अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पंच क्लेश हैं। मैं जिन क्लेशों से मुक्त हूँ, तुम उन क्लेशों से युक्त हो। तुम्हें अपना स्वरूप पता है? तुम्हारी पहचान है-'इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञज्ञनान्यान्मनो लिंगमिति' तुममें राग-द्वेष, इच्छा, सुख-दुःख आदि गुण हैं। अतः हम दोनों में कुछ बातों में समानता है तो कुछ बातों में भिन्नता भी है।

मेरे प्यारे चुन्नू-मुन्नू! तुम विश्व रूपी शिक्षण संस्थान में ज्ञान, वैराग्य, मुक्ति आदि की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजे गए हो। जब तुम्हारी शिक्षा पूरी हो जायेगी तब मेरी समीपता प्राप्त कर लोगे। अपने लक्ष्य से विचलित मत होना। मेरे प्रति आस्था बनाये रखना, कभी न कभी मुझ तक अवश्य पहुँच जाओगे। यदि आवश्यक समझो तो मेरी चिट्ठी अन्य अपने साधक साथियों को भी पढ़ा ताकि उनके मन में भी महान सत्ता के प्रति निराशा का भाव प्रकट न हो।

''उठो मुन्ना, उठो, मेरी चिट्ठी तो पूरी हो गई पर तुम्हारा सपना नहीं टूटा। नींद में कब तक बड़बड़ाते रहोगे।'' और माँ की मधुरवाणी से मुन्ने की नींद खुल गई।

-कुटी न. 230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार) उत्तराखण्ड, मो. 09639149995

## जब कभी

(1) जब कभी अपने बूढ़े मां-बाप पर खीज उठो, गुस्से में आ जाओ तो अपने बचपन का पुराना एल्बम उठा लेना, उसमें वह फोटो देखना जिसमें तुम घुटनों-घुटनों चलते यहां से वहां डोलते थे और तुम्हारी यही मां-बाप निहाल हो हो जाते थे। खुशी से तुम्हें चूम-चूम लेते थे। तुम्हारी एक-एक किलकारी पर ये दोनों वारी-वारी जाते नहीं अधाते थे।

(2) जब कभी अपनी बूढ़ी हो गई पत्नि पर ज्यादा नाराजगी महसूस हो, चिढ़ हो जाए तो जरा देर के लिए अपनी कल्पना में वह दृष्य साकार कर लेना जब इसी औरत को नई नवेली शरमाती सकुचाती दुल्हन के रूप में तुम बड़े चाव से बड़े अरमानों से लाए थे, और जिसने अभी तक तुम्हारे हर सुख-दुख में तुम्हारा बराबर साथ दिया। जिसने तुम्हें संतान दे कर पिता का पद दिलाया। और....

- **ओमप्रकाश बजाज,** पोस्ट बॉक्स 595, जी.पी.ओ. इंदौर, (मध्य प्रदेश)-452001, फोन: 0731-2593443, मो. 09826496975

## सुविचार

जीवन में किसी का भला करोगे, तो लाभ होगा
क्योंकि भला का उल्टा लाभ होता है।
जीवन में किसी पर दया करोगे, तो वो याद करेगा
क्योंकि दया का उल्टा याद होता है....

# टंकारा यात्रा 2017

**सैरकर दुनियाँ की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ। जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ।।**

**।। यात्री बनकर आयें-मित्र बनकर जाएं ।।**

## आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो।
## टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम, द्वीव

## टंकारा यात्रा अवधि 7 दिन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी के प्रेरणा से धर्म प्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरी धाम तीर्थ यात्रा का सुनहरी अवसर। 18.02.2017 को दिल्ली सराय रोहिला स्टेशन से चलेंगे व 26.02.2017 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

**कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल :** ❑ 18.02.2017 दिल्ली सराय रोहिला से पोरबन्दर एक्सप्रैस द्वारा द्वारका के लिए प्रस्थान। ❑ 19.02.2017 भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारकाधीश मन्दिर ❑ 20.02.2017 श्रीकृष्ण महल व भेंट द्वारका, गोपी तालाब ❑ 21.02.2017 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर ❑ 22.02.2017 सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व द्वीव का समुद्री किनारा व सनसैट। ❑ 23.02.2017 प्रातः टंकारा के लिए प्रस्थान शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 24.02.2017 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 25.02.2017 प्रातः नाश्ते या लंच के पश्चात टंकारा से दिल्ली के लिए प्रस्थान। ❑ 26.02.2017 दिल्ली स्टेशन पर यात्रा समाप्त।

**नोटः**- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है अगर किसी व्यक्ति के पास रेलवे का पास है तो वह 9,500/- रूपये देकर जा सकता है।

**यात्री किराया-स्लीपर क्लास : 13800/-, राजधानी 3 ए.सी. 16800/-, राजधानी 2 ए.सी. 19800/-, ❒ सीनियर सिटिजन- स्लीपर क्लासः 13400/-, राजधानी 3 ए.सी. 15700/-, राजधानी 2 ए.सी. 18700/-, ❒ महिला सीनियर सिटीजन- स्लीपर क्लासः 13200/-, राजधानी 3 ए.सी. 15400/-, राजधानी 2 ए.सी. 18400/-**

**यात्रा नियम :** ❒ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व नौकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। ❒ कार्यक्रम में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार, संयोजक का होगा। ❒ हमारी यात्रा में अकेली महिला व वृद्ध महिलाऐं भी यात्रा कर सकती हैं क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❒ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक या ड्रफ्ट ARYA TRAVEL अथवा विजय सचदेव के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❒ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेगें। इस यात्रा में रहने व खानें की व्यवस्था Hotel, Tourist, Class, Non Star, Neat & Clean होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❒ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्पयूटर द्वारा जो सीट नम्बर मिलेगा वही आपका सीट नम्बर होगा। ❒ कृपया सभी सीनियर सिटीजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखें। ❒ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी-कभी सम्भव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसन्द की खाने-पीने की मन पसन्द वस्तुएं अपने पास रखें। ❒ सीट बुक कराने के लिए ए.सी. के यात्री 4000/- रूपये अन्य यात्री 2000/- रूपये अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रद्द करवाता है तो 4000/- रूपये प्रति व्यक्ति कटवाने होंगे। क्योंकि होटल व बस बुक हो चुकी होती है।

**आर्य ट्रैवल**

**अमित सचदेवा** ( मो. 9868095401, 9350064830),

**विजय सचदेवा ( सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा )**

2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, फोन : 011-45112521, मो. 09811171166

# ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा 2017

**कार्यालय-आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)**

**महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा-22 फरवरी से 28 फरवरी 2017 तक**

**प्रस्थान :** 22 फरवरी 2017 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा।
(21 फरवरी 2017 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

**वापसी :** 28 फरवरी 2017 को अमरोहा सायं 5.45 बजे आला हजरत एक्सप्रेस से।

**परिभ्रमण कार्यक्रमः** पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका, सोमनाथपुरी, टंकारा आदि ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ-जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मन्दिर आर्दि दर्शनीय स्थलों का परिभ्रमण।

**सहयोग राशिः** प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी-प्रबंध समिति द्वारा होगी। इस निमित्त 3500/- रूपये (तथा सीनियर सिटीजन के लिए केवल 3000/-रूपये) की धनराशि देय होगी। यह राशि आप आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं अथवा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा-अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 IFS Code SBIN0000610 में जमा करा सकते हैं।

या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय है।

**यात्रियों को आवश्यक निर्देशः-** ACIII व II में भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। किराये का अन्तर देय होगा।) - गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। - यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें। - ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलियां, शेविंग का सामान, तेल आदि। - बहुमूल्य सामान साथ न रखें। - अपनी औषधि साथ रखें। -आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। - आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। - कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं.....

**- डॉ. अशोक आर्य-संपादक/सयोंजक, मो.09412139333**

# टंकारा समाचार

## पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 19 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

# हवाई जहाज से दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

**टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। दिल्ली से प्रतिदिन Air India Flight AI9631 प्रातः 5.50 पर राजकोट के लिए जाती है और राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए प्रतिदिन Air India Flight AI9632 प्रातः 8-55 पर आती हैं। टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।**

# આવો..... જાણો... અને માણો
# ........ ઋષિમેળાને ટંકારાને

રામેન્દુ

હેં ભાઈ તમે તો ત્યારે ઋષિમેળામાં જવાના જ ને?

હા... જવાનો... જવાનો અને કંઈ આજકાલનો નથી જતો.... એ...એ.... છેક ૧૯૭૩ના વર્ષથી નિયમિત રીતે જઉં છું.

એમ? દર વખતે શું જવાનું? બધું એકનું એક જ હોય ને?

જુઓ ભાઈ..... સંસ્થા જાગૃત છે એટલે સ્વાભાવિક છે કે પરિવર્તનો પણ થતા જ રહે. એક જમાનો હતો ઋષિમેળામાં યાત્રિકો માટે પ્રાથમિક સુવિધાઓ નહોતી. ધીમે ધીમે એ ઊભી થઈ.

ઋષિલંગરનું સ્થળ સુવિધાજનક બન્યું.

ઋષિ ભક્તોના આવાસ-નિવાસ માટે સુવિધાઓ ઊભી કરવામાં આવી છે.

જ્યારે જયારે જઉં છું કંઈક નવું જ નિર્માણ જોવા મળે છે. અને હવે તો સાંભળ્યું છે કે વિશાળ યોગસાધના કેન્દ્ર સભાગૃહનું નિર્માણ થઈ રહ્યું છે.

...... ......બસ... ભવનોનું જ નિર્માણ થઈ રહ્યું છે? ......

...... ના..ના...... જ્યારે જ્યારે જઉં છું કંઈક નવું હોય છે. સંસ્થાની પ્રગતિ..... નવા નવા વિદ્વાનો..... તો જુના અનુભવી વિદ્વાન વક્તાઓ... ત્યાગી-તપસ્વીઓ.... સમાજ માટે ભેખ ધરીને બેઠેલાઓ....... આ બધાનો સત્સંગ એક એલૌકિક અનુભવ મળે છે. ભવનો ન હોય તો આ બધી પ્રવૃત્તિઓ કઈ રીતે થઈ શકે? ......

મેં બદલાતા જોયા છે ઉપદેશક વિદ્યાલયના વિદ્યાર્થિઓને.....

બદલાતા જોયા છે ઉપદેશક વિદ્યાલયના વિદ્વાન આચાર્યોને......

બદલાતા જોયા છે ઉપદેશક વિદ્યાલયના ટ્રસ્ટિઓને......

પણ નથી બદલાતા જોયા ઉપદેશક વિદ્યાલયના ધ્યેયને......

......શેઠ નાનજી કાલિદાસ મહેતા અને સ્વનામ ધન્ય મહેરચન્દ મહાજનજીએ જે ઉદ્દેશ્યથી સંસ્થાનો પાયો નાખ્યો છે તે ઉદ્દેશ્યને બદલાતા નથી જોયો. ......

......આચાર્ય હોય કે પછી ટ્રસ્ટી એક જ લક્ષ્ય, એક જ ઉદ્દેશ્ય.... ઋષિ દયાનન્દના વિચારોનો પ્રચાર થાય એવી પ્રવૃત્તિઓનું સંચાલન કરવું. ......

આચાર્ય સત્યદેવજીએ સ્વપ્ન જોયું હતું... તેમના વિદ્યાર્થિઓ દેશ-વિદેશમાં ફેલાઈ ગયા......

.......કોઈકે આફ્રિકામાં એવું કામ કર્યું કે ત્યાના મૂળ આફ્રિકનને સમાજનો વિદ્વાન પુરોહિત બનાવી દીધો.

.......એક વિદ્યાર્થીએ ઉત્તર ભારતની સુષુપ્ત થઈ ગયેલી આર્યસમાજો જાગૃત કરી.

.......કેટલાકે ગુજરાતમાં અને અન્યત્ર આર્યસમાજની શાખાઓની સ્થાપના કરી.

.......કેટલાકે અન્ય નામોથી રાષ્ટ્ર જાગૃતિ મિશનની પ્રવૃત્તિઓ ઊભી કરી.

.......એક સ્નાતકનું તો હમણાં જ મુમ્બઈની આર્યસમાજોએ ભેગા થઈને સમ્માન કર્યું છે.

...... અહીંના સ્નાતકને પ્રતિષ્ઠિત જવાહરલાલ નહેરુ યુનિ.માં પ્રવેશ મળે છે, દિલ્હી યુનિ.માં પ્રવેશ મળે છે. પી.એચ.ડી. કરવાની અનુમતિ મળે છે.

આદર્શ વૈદિક ગુરુકુલ કેવું હોય, એમની દિનચર્યા કેવી હોય... આચાર્ય અને અંતેવાસીનો સંબંધ કેવો હોય એ જોવું હોય તો ટંકારાયાત્રા કરવી જ રહી.

માત્ર ચાર વિદ્યાર્થિઓથી સ્થપાયેલ વિદ્યાલયમાં આજે સૈંકડાની સંખ્યામાં વિદ્યાર્થિઓ ઋષિમિશનને આગળ વધારવાના સંકલ્પ સાથે ભણી રહ્યા છે.

પંચ મહાયજ્ઞોમાં એક છે અતિથિ યજ્ઞ. અતિથિ યજ્ઞ કેવી રીતે થાય એ અનુભવવું હોય તો ટંકારા ગુરુકુલના બ્રહ્મચારીઓના સાન્નિધ્યમાં રહી જુઓ ... પ્રત્યક્ષ અનુભવ થઈ જશે.

સસ્વર અને અષ્ટવિકૃતિ વેદપાઠ કરતા બ્રહ્મચારિઓને જોવા હોય તો ટંકારા પધારો

ગૌ-સેવા કરતા બ્રહ્મચારીને જોવા હોય તો ટંકારાના બ્રહ્મચારીને ગૌસેવા કરતો જુઓ.

ગુરુકુલની સફાઈ કેવી રીતે કરાય એ જોવું હોય તો ટંકારાના બ્રહ્મચારીને સાંજના સમયે ગુરુકુલ પરિસરની સફાઈ કરતા જોવા આવો.

સાદુ પણ સાત્વિક મરચા-મસાલા વગરનું ભોજન આનન્દપૂર્વક કઈ રીતે જમી શકાય એ અનુભવવું હોય તો ટંકારા પધારો.

આ બધું જે પહેલા નહોતું દિવસે દિવસે બદલાઈ રહ્યું છે.

શ્રી રામનાથ સહગલજી જે ટ્રસ્ટના મહામન્ત્રી છે આજે ૯૨ વર્ષની આયુમાં પણ દિવસ-રાત ઋષિ દયાનન્દના મિશનને ટંકારામાંથી કઈ રીતે વેગીલું બનાવી શકાય તે માટે પરિશ્રમ અને પુરુષાર્થ કરતા જોયા છે.

શ્રી લધાભાઈને વયોવૃદ્ધ અવસ્થામાં ઋષિ દયાનન્દજીના મિશન અને ગુરુકુલની પ્રગતિ માટે ચિંતા કરતા મેં જોયા છે.

બસ...... બસ...... ...... હવે તો હું પણ પ્રણ લઉં છું કે દરેક ઋષિમેળામાં આવીશ..... તન-મન-ધનથી ઋષિમિશનને આગળ વધારવામાં ટ્રસ્ટને સહયોગ આપીશ. મારા પરિવારને ઇષ્ટમિત્રો સાથે ટંકારા લઈ આવીશ

# समाचार दर्पण

# गुजरात सरकार के मुख्यमन्त्री श्री विजय रूपाणी ने टंकारा बोधोत्सव 2017 पर आने का निमन्त्रण स्वीकारा

**टंकारा ट्रस्ट का उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल आदरनीय श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के नेतृत्व में गुजरात के मुख्यमन्त्री श्री विजय रूपाणी जी को वर्ष 2017 के टंकारा बोधोत्सव पर सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण हेतु पहुंचे। इस प्रतिनिधि मंडल में श्री रंजीत भाई परमार (राजकोट), श्री हंसमुख भाई परमार (टंकारा), डॉ. अविनाश भट्ट (जामनगर), आचार्य रामदेव जी, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (अहमदाबाद), श्री रमेश मेहता (कार्यालय संयोजक टंकारा)**

# 90वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस हर्षोल्लास सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली-राज्य) नई दिल्ली के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशाल शोभा यात्रा एवं सार्वजनिक सभा का आयोजन 25 दिसम्बर 2016 को किया गया। प्रात: काल 8 बजे से 9:30 बजे तक आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य-केन्द्रीय सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों के समस्त आर्य-समाजों, आर्य वीर एवं वीरांगनाओं के दल, आर्य विद्यालयों एवं आर्य संगठनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। 90वीं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती शोभा यात्रा बलिदान भवन नया बाजार, लाहौरी गेट से चलकर, खारी बावली, चांदनी चौक, टाऊन हाल, नई सड़क तथा अजमेरी गेट होती हुई, लगभग तीन किलोमीटर का सफर तय कर 1 बजे रामलीला मैदान में पहुंची, जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य वीरदल एवं वीरांगना दलों तथा आर्य विद्यालयों ने अपनी-अपनी सुन्दर झाकियों का निर्माण कर महर्षि दयानन्द एवं देश भक्तों के चित्रों, कलाकृतियों, वेदमन्त्रों से लिखित बैनरों, ओ३म् की पताकाओं से अच्छी प्रकार सजाया हुआ था।

**दिल्ली में आयोजित राजस्तरीय श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर डॉ. अशोक के. चौहान को सम्मानित करते श्री सुरेश अग्रवाल जी महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) श्री कीर्ति शर्मा एवम् साथ में आनन्द चौहान (डायरेक्टर एमेटी शिक्षण संस्थान)**

इस अवसर पर समाज के मूर्धन्य विद्वान एवं कार्यकर्त्ताओं में श्री ऋषिराज वर्मा को वेद प्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, श्री वरूण इन्द्र कथूरिया को डॉ. मुमुक्षु आर्य अमर शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल स्मृति पुरस्कार, श्री सुरेन्द्र सिह नेगी को पं. ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार, श्री बाल कृष्ण आर्य को लक्ष्मी चन्द भूरो देवी स्मृति पुरस्कार व श्री दिनेश आर्य को महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

# वार्षिकोत्सव

<u>आर्य समाज नोएडा, आर्ष गुरुकुल नोएडा एवं वानप्रस्थाश्रम</u> के तत्वावधान में वार्षिक महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें आर्ष गुरुकुल नोएडा के प्राचार्य डॉ. जयेन्द्र जी के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन महायज्ञ किया गया। आचार्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हवन में वेद मन्त्रों के बोलनें का विधान है। वेद मन्त्रों के पाठ से परमेश्वर की भक्ति होती है समारोह में अनेक सम्मेलनों जैसे भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन आदि का आयोजन भी किया गया जिसमें श्रोताओं को वैदिक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। वैदिक विद्वान स्वामी विश्वानन्द जी ने कहा कि संसार में सभी प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ यौनी मनुष्य मानी जाती है। डॉ. कर्ण सिंह शास्त्री जी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन का आयोजन श्रीती उषा किरण कथूरिया, उपप्रधाना आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की अध्यक्षता में किया गया। जिसका संयोजन श्रीमती मधु भसीन ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रही श्रीमती बिमला बाथम जी, विधायक ने कहा कि वास्तव में परमात्मा ने प्रशासन का मौलिक रूप नारी के रूप में ही निर्मित किया है। समापन समारोह में ऐमिटी शिक्षण संस्थान की चेयरपर्सन श्रीमती डॉ. अमिता चौहान जी ने बताया कि सोचो सेवा करने के लिए, सीखो जीतने के लिए और निरंतर सीखते रहो। इस अवसर पर आर्ष गुरुकुल के छात्र एवं छात्राओं द्वारा देशभक्ति की रचनायं प्रस्तुत की गई जिसको श्रोताओं ने बहुत सराहा। समारोह के कुशल संचालन आर्य समाज नोएडा के मन्त्री कैप्टन अशोक गुलाटी एवं आचार्य जयेन्द्र कुमार ने संयुक्त रूप से किया।

आचार्य भवानीदास स्मृति पुरस्कार से उने सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार एवं सावित्री आर्या द्वारा आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ''वैदिक विद्वान'' को एवं माता लक्ष्मी देवी स्मृति पुरस्कार भजनोपदेशक श्री रामरख जी को दिया गया। माता नारायणी देवी की स्मृति में पुरूस्कार श्रेष्ठ सात ब्रह्मचारियों-सत्यम आर्य, धनंजय, विजय, सुरजीत, हरप्रीत गौड, धर्मराज, श्याम पाठक को श्री वीरप्रताप अरोड़ा द्वारा दिया गया। आर्यसमाज के सदस्यों, कार्यकर्त्ताओं को समापन पत्र प्रदान किये गये।

❑❑❑

<u>डी.ए.वी. कैलाश हिल्स</u> के प्रांगण में दिनांक 07.12.2016 को विद्यालय का रजत जयंती समारोह वार्षिकोत्सव के रूप में मनाया गया। जिसमें भारतीय जनता पार्टी के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। गायत्री मन्त्र और डी.ए.वी. गान के पश्चात कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। बच्चों ने अनेक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की। प्रधानाचार्य श्रीमती इरा खन्ना ने विद्यालय की 25 वर्षो की प्रगति-यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ''अंग्रेजी नाटिका'' ''माया'' रहा, जिसमें बुराई पर अच्छाई की विजय के भाव को बखूबी दर्शाया गया। श्री टी.आर. गुप्ता जी ने भी प्रधानाचार्या जी को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया। विद्यालय प्रबन्धक श्री एन.के. सहगल जी एवं डॉ. मोहनलाल जी ने माननीय अतिथियों और अभिभावकों का आभार व्यक्त किया।

<u>गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली</u> देश का वैदिक संस्कृत शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र है जो विगत 83 वर्षो से अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य कर रहा है। इस वर्ष यहां 37वां चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ आर्यजगत् की विभूति डॉ. महावीर अग्रवाल जी के ब्रह्मत्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आयोजन में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के युवा आर्य विद्वान एवं प्रोफेसर डॉ. रामचन्द्र जी भी पधारे हुए थे। आपका यज्ञीय जीवन पर सारगर्भित महत्वपूर्ण सम्बोधन हुआ।

125 यजमान दम्पतियों द्वारा 41 यज्ञ वेदियों में दी गई आहुतियों से सम्पन्न हुआ <u>आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका (जिला नूंह) मेवात हरियाणा</u> का 63वां वार्षिकोत्सव। अपनी धर्मपत्नी व पुत्र सहित जिला के उपायुक्त श्री मनीरामशर्मा जी ने दी प्रदेश की सुख समृद्धि के लिए आहुतियां। मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र मेवात के फिरोजपुर झिरका नगर का 63वां वार्षिकोत्सव ऐतिहासिक उपलब्धि से जाना गया। विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो नगर के मुख्य मार्गो से होती हुई आर्य समाज में करीब 4 घंटे बाद समाप्त हुई। गुरुकुल नजीबाबाद की पूर्व छात्राये श्रीमती श्रुति एवं श्रीमती स्मृति जी जयपुर व दिल्ली से वेदपाठ के लिए आई थी। जो वेदपाठअत्यंत तीव्रता व शुद्धता से करती थी। आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी जी होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) ने यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वस्तिवाचनम, शंतिकरणम् सहित पाठ किये जा रहे यजुर्वेद के विभिन्न मन्त्रों की मनोहारी व्याख्या की। दोपहर में विशेष रूप से महिला सम्मेलन रखा गया था जिसमें माताओं बहनों से सम्बंधित भजन व प्रेरणात्मक उपदेश हुये।

## शोक समाचार

बड़े शोक से साथ सूचित करना पड़ रहा है कि दयानन्द माडल स्कूल के संस्थापक , प्रसिद्ध शिक्षाविद व समाज सेवी, आर्य समाज कृष्ण नगर के वरिष्ठ संरक्षक, सहयोगी एवं मार्ग दर्शक श्री विशम्बर नाथ भाटिया जी का 7 जनवरी 2017 को प्रात: आकस्मिक निधन हो गया था। उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति से अंतिम संस्कार हुआ। 10 जनवरी को दोपहर दयानन्द माडल स्कूल मे उनकी श्रद्धांजलि सभा मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री धर्मपाल जी आर्य, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली की उप प्रधाना श्रीमती उषा किरण जी , पूर्वी दिल्ली की लगभग सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाव भीनी श्रद्धांजली अर्पित की। भाटिया जी एक सरल हृदय, शांत स्वभाव और सात्विक जीवन जीने वाले महान व्यक्तित्व के धनी थे। शिक्षा के क्षेत्र में आपका नाम सर्व प्रसिद्ध एवं सर्वविदित था। आपका स्कूल चलाने का उद्देश्य धन अर्जित करना न होकर शिक्षा को प्रसारित करना था।

**टंकारा परिवार की ओर से उस आर्य रत्न के अकस्माक देहावसान पर भावभीनि श्रद्धांजलि।**

# वास्तविक भक्त कौन

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पंचकूला स्थित कार्यालय में बैठा कुछ आवश्यक कार्य कर रहा था कि अचानक पहुंचे अधीक्षक महोदय ने रामनवमी के एक कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र देते हुए अनुरोध किया कि चंडीगढ़ इस कार्यक्रम में परिवार सहित पहुंचें। निमंत्रण पत्र लेकर मैंने उन्हें अपनी विवशता बताई कि रामनवमी के दिन मैं पहले ही किसी अन्य कार्यक्रम में बतौर वक्ता स्वीकृति दे चुका हूं। यह सुनकर कुछ मायूस होकर अधीक्षक महोदय ने ताना कसा ''आप आर्य समाजी तो राम को मानते नही शायद इसीलिए बहाना बना रहे हैं।'' उनकी बात सुनकर मैं चौंका और सोचने लगा लोगों में विशेषकर पौराणिक जगत में यह कैसी भ्रान्ति है कि आर्य समाज राम को नहीं मानता। इसका निराकरण करना मुझे आवश्यक लगा। मैंने आग्रहपूर्वक अधीक्षक महोदय को बैठा लिया और आर्य केन्द्रीय सभा चंडीगढ़ के सहयोग से आर्य समाज सैक्टर 19 में आयोजित होने वाले रामनवमी के कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र निकाल कर दिया और बोला ''देखिए श्रीमान मैं कोई बहाना नहीं बना रहा मैं इस कार्यक्रम के लिए पहले स्वीकृति दे चुका हूं और शायद इससे आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि आर्य समाज मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम की शिक्षाओं को मानता है। फिर भी आपके मन में जो भी शंका हो आप नि:संकोच पूछ सकते हैं उनका निराकरण करने का प्रयास करूंगा।''

हमारे बीच हुई उस चर्चा को ही मैंने रामनवमी के दिन आर्य समाज सैक्टर 19 चंडीगढ़ में रखा जिसे मैं इस लेख में भी रख रहा हूं।

उन्होंने पहला प्रश्न दागा ''परन्तु विवेक जी आर्य समाज में हमने कभी राम की मूर्ति तो देखी नहीं फिर आप राम को कैसे मानते हैं?'' मैंने समझाया समाज का पतन यहीं से प्रारम्भ हुआ जब हम चरित्र को छोड़कर चित्र की पूजा करने लगे। हम स्वयं चेतन होकर भी जड़ के आगे नतमस्तक होकर माथा टेकने लगे। हमने रामचरित्र ना पढ़ा ना समझा फिर उन आदर्शों को जीवन में कैसे धारण करते जिनके कारण श्रीराम मर्यादा पुरुषोतम कहलाए। मैंने समझाते हुए कहा

**कलयुग के इंसान की, उल्टी देखी चाल ।**
**जड़ के आगे चेतना, क्यों झुकावे भाल ॥**

इस बात को सुनकर सज्जन थोड़ा चौंके पर जड़ मूर्ति पूजा पर सीधे प्रहार से तिलमिला गए और बोले ''हम राम की पूजा करते हैं, राम नाम की माला जपते हैं और राम की मूर्ति में ही राम का चरित्र देखते है।'' मैंने उन्हें थोड़ा सा संयत करके पूछा ''राम की पूजा से आपका तात्पर्य क्या है?'' ''हम भोग लगाते हैं, आरती करते हैं, सीताराम जपते हैं।'' उनका उत्तर था। अब मैंने समझाने का प्रयास किया पूजा का अर्थ है यथायोग्य सत्कार आपने मूर्ति बनाकर उसको भोग लगाकर प्रसाद खिलाने का प्रयास किया क्या? कभी उस प्रतिमा ने आपका वह प्रसाद स्वीकार किया या पूजा के नाम पर आया प्रसाद पुजारी पचा गया या वह घूम कर वापिस बार बार बिका। यह समझाते हुए बतलाया कि

**पत्थर पूजक तो यहां, पत्थर दिल हैं खूब ।**
**बच्चे बिलखें भूख से, पत्थर पी गए दूध ॥**

आपने नाम को बार बार जपा क्या उससे राम के चरित्र का कोई ज्ञान हुआ, क्या केवल नाम जपते रहने से मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के जीवन चरित्र को जान मान कर हम अपने जीवन में धारण कर पाए।

अचानक टोकते हुए वह बोले ''अच्छा बताओ आर्य समाज कैसे राम की भक्ति करता है?'' मैंने समझाने का प्रयास किया ''राम की सच्ची भक्ति तो आर्य समाज ही करता है। हम श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम मानते हैं और वह जीवन भर जिन मर्यादाओं पर चलते रहे उनको जान मान कर हम अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करें। देखिये हमारे और आपके श्रीराम की भक्ति का एक मूल अन्तर है। आप कहते हैं सीता-राम, सीताराम, सीताराम कहिये, जिस विधि राखे राम ता विधि रहिये। पर आर्य समाज मानता है सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये, जिस विधि रहते राम ता विधि रहिये। हम जिस विधि राखे राम कह कर स्वयं को अकर्मा बना लेते हैं और वेद में **'अकर्मा दस्यु'** कहकर कर्महीनता की भर्त्सना की गई है। अपितु यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दूसरे मंत्र में **कुर्वन्नेह वा कर्माणिख्र.** कहकर सौ वर्षो तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करने का आदेश है। अब हम जीवन में कार्य कैसे करें तो इसकी प्रेरणा हम मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के जीवन से भी ले सकते हैं।

मेरी बात सुनकर कुछ खीझकर वह बोले यदि आप इतना ही राम को मानते हैं तो उन्हें ईश्वर क्यों नहीं मानते और उनके मन्दिर क्यों नहीं बनाते। उनकी बात सुनकर मैं हंसा ''देखिये महाशय ईश्वर का सच्चा स्वरूप तो महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में दे दिया है जो कि ईश्वर सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम भी ईश्वर के इसी स्वरूप को मानते थे और यज्ञ किया करते थे। अब बताओ जिस ईश्वर की पूजा राम स्वयं किया करते थे हम भी उनकी पूजा करें या फिर उनके सिद्धांतों के विपरीत उस ईश्वर के भक्तों की पूजा प्रारम्भ कर दें। हम श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम आर्य वैदिक धर्म पालक मानते हैं। जिन आर्य सिद्धान्तों का श्रीराम ने जीवन भर पालन किया हमारा भी कर्तव्य बनता है कि उन मर्यादाओं, सिद्धांतों, शिक्षाओं को हम भी जाने और मानें यदि सही मायनों में हम उनकी भक्ति करते हैं। जहां तक राम मन्दिर का प्रश्न है तो अयोध्या किसी स्थान विशेष का ही नाम नहीं अपितु अष्ट चक्रा नव द्वारा मम शरीर पुर अयोध्या अर्थात आठ चक्रों नौ द्वारों वाला हमारा यह मनुष्य शरीर ही अयोध्या नगरी है और हम राम चरित्र को जान मान कर उन सिद्धांतों शिक्षाओं, मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने मन मंदिर में उन्हें स्थापित करके अपने अंदर ही भव्य राम मंदिर का निर्माण कर सकते हैं। मेरी बात सुनकर अधीक्षक महोदय अब संतुष्ट हो चुके थे और बोले ''चलिये इस बार मैं भी आर्य समाज के रामनवमी के कार्यक्रम में चलूंगा।''

-602 जी एच 53, सैक्टर 20 पंचकूला

## सुविचार

अच्छे कार्य जीवन को महान बनाते है। यह मत भूले कि यह जीवन अस्थायी है। इसीलिए जीवन के हर क्षण का उपयोग किया जाना जरूरी है। मौत आ जायेगी तो फिर कुछ भी न रहेगा। न यह शरीर, न कल्पना, न आशा। हर चीज मौत के साथ दम तोड़ देगी।

**- आचार्य चाणक्य**

# टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

# गौ-दान : महा-दान

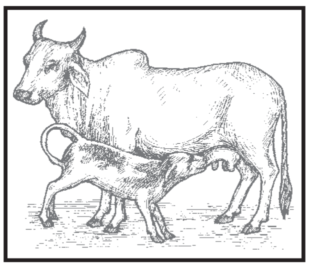

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

***टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।***

**शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

# ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**निवेदक**

**शिवराजवती आर्या**
उप-प्रधाना

**रामनाथ सहगल**
(मन्त्री)

( पृष्ठ 1 का शेष )

स्वीकार करना होगा।

ईश्वर के जिन गुणों की चर्चा हमने उपर्युक्त पंक्तियों में की है वह यथार्थ व सत्य हैं। इसके अतिरिक्त ईश्वर मनुष्य आदि सभी प्राणियों की जीवात्माओं को पूर्व जन्म-जन्मान्तर के कर्मों के अनुसार उन्हें मनुष्य व इतर प्राणियों की योनियों में जन्म देकर सुख व दुःख प्रदान करता है। हम वर्तमान जीवन में मनुष्य योनि में हैं। यह मनुष्य जीवन हमें ईश्वर की व्यवस्था द्वारा ही प्राप्त हुआ है। माता-पिता व समाज के अन्य संबंधी आदि इसमें सहायक बने हैं जिनकी व्यवस्था भी ईश्वरीय व्यवस्था से हुई है। हम चेतन, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अविनाशी, पूर्वजन्म-परजन्म के चक्र में आबद्ध, वेदज्ञान प्राप्ति व परोपकार आदि उत्तम कर्मों को करके मनुष्य आदि योनियों को प्राप्त करते हैं तथा वेदमार्ग का आचरण व पालन कर समाधि द्वारा ईश्वर साक्षात्कार कर सकते हैं। हमने जीवन में अनेक उतार चढ़ाव देखें हैं और कुल मिलाकर हमारा जीवन सुखों से ही युक्त रहा है। हमें जो दुःख मिलते हैं वह हमारे इस जन्म वा पूर्वजन्म में किए गये अविद्यायुद्र कर्म ही होते हैं। संसार के सभी मनुष्यों व प्राणियों को सुख-दुःख की व्यवस्था करने से ईश्वर की समानता किसी जीव से नहीं हो सकती। सभी उसके कृतज्ञ हैं। यह सभी सुख हमें ईश्वर की अहैतुकी कृपा से दानरूप में प्राप्त हुए हैं। अतः बिना किसी निजी प्रयोजन के सभी जीवात्माओं वा प्राणियों को नाना प्रकार के सुखों से युद्र करने के कारण ईश्वर संसार में सबसे महान व महानतम् है। यइ अकाटड व सर्वमान्य है तथा अनुमानों व अनुभवों से सिद्ध तथ्य है।

ईश्वर के बाद संसार में सबसे अधिक महान किसे मान सकते हैं? महान वह मनुष्य होता है जो संसार का ईश्वर के बाद सबसे अधिक उपकार करता है। सभी माता-पिता व आचार्य अपनी सन्तानों व शिष्यों पर उपकार करते हैं। अतः सभी संतानों के लिए अपने माता-पिता व आचार्य महान हैं। माता-पिता व आचार्य तो अपनी ही सन्तानों व शिष्यों का उपकार व कल्याण करते हैं परन्तु जो सभी मनुष्यों को अपनी सन्तान मानकर उनका सर्वाधिक कल्याण करें वह अधिक महान् होते हैं। ईश्वर ने जब सृष्टि उत्पन्न की तो अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न स्त्री व पुरुषों के माता-पिता व आचार्य नहीं थे। ईश्वर ने ही माता-पिता सहित आचार्य की भी भूमिका निभाई थी। ईश्वर ने ही आदि मनुष्यों को जन्म दिया था तथा ज्ञान भी ईश्वर से ही मिला था। उसी ज्ञान का नाम ही ''वेदह है। यह बता दें कि चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को सर्वान्तर्यामी ईश्वर के द्वारा उन ऋषियों की आत्माओं में स्थापित किया गया था। इन ऋषियों ने ब्रह्माजी को चारों वेदों का ज्ञान दिया। यह आदि पांच ऋषि ही सृष्टि के आरम्भ में चारों वेदों के ज्ञान से सम्पन्न हुए। ईश्वर से वेदज्ञान की प्राप्ति के बाद इन्होंने वेद ज्ञान को अन्य स्त्री व पुरुषों को एक आचार्य की भांति पढ़ाया जिससे ज्ञान प्राप्ति वा अध्ययन अध्यापन की परम्परा का आरम्भ हुआ। सृष्टि की आदि में आरम्भ यह परम्परा आज तक चली आ रही है। यत्र तत्र इसमें देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन अवश्य हुए हैं। इस प्रकार से ज्ञान प्राप्त होने से ही संसार में ज्ञान व विज्ञान का विकास व उन्नति हुई है जिसका श्रेय सृष्टि के आरम्भ काल के आचार्यों को है। उन्ही आचार्यो से यह ज्ञान संस्कृत में अध्यापन द्वारा आगे बढ़ता व फैलता रहा और समय व भौगोलिक कारणों से संस्कृत से इतर उच्चारण की अशुद्धियों के कारण अनेक भाषाओं का उदय व प्रचलन भी हुआ है। आज हमें जो सुख के साधन मिले हैं वह इसी सृष्टि के पदार्थों से ज्ञान की उन्नति द्वारा प्राप्त हुए हैं। इसका श्रेय हमारे सृष्टि के प्राचीन आर्यों व वेद ज्ञान से सम्पन्न ऋषियों को सर्वाधिक है। इसका कारण यह है कि हमारे ऋषि प्रायः विवाह न कर ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन व्यतीत करते थे। जो गृहस्थी होते थे वह भी वेद के ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन करते थे। ऋषियों का मुख्य कार्य ईश्वरोपासना, यज्ञ द्वारा विश्व का कल्याण, अध्यापन, वेद ज्ञान का प्रचार व शासन के संचालन में राजाओं को मार्गदर्शन करना आदि होता था। अपनी आवश्यकतायें अल्प व नाम मात्र रखते हुए ब्रह्मचर्य का पालन, ईश्वरोपासना, ईश्वर का साक्षात्कार और देश व समाज को अध्यात्म सहित भौतिक विद्याओं, गणित, ज्योतिष आदि का उपदेश व ज्ञानार्जन कराने से यह ऋषि व आचार्य ही श्रेष्ठ मानव सिद्ध होते हैं। अपने इन गुणों के कारण ही यह संसार के पूजनीय थे। कोई भी संसारी जीव जो गृहस्थी हो और वेदज्ञान से वंचित हो, वह संसार का उन ऋषियों के समान कल्याण कदापि नहीं कर सकता। अतः प्राचीन काल से अब तक जो ज्ञान से सम्पन्न और ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए योगी ऋषि हुए हैं वही संसार में सबसे महान थे। उनकी महानता में अन्य संसारिक मनुष्य ज्ञान विज्ञान से युक्त होते हुए भी उनकी तुलना में उनसे पीछे हैं।

इन ऋषियों की परम्परा में ही उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द (1825-1883) भी सम्मिलित हैं जो अपने गुणों, सिद्धियों, ज्ञान, चारित्रिक विशेषताओं एवं सर्वजनहितकारी कार्यों के कारण महान पुरुषों में सम्मिलित हैं। महाभारत काल के बाद हमें महर्षि दयानन्द के समान अन्य कोई महान पुरुष दृष्टिगोचर नहीं होता। इनसे पूर्व महर्षि मनु, पाणिनी, यास्क, वेद व्यास, बाल्मीकि, पंतजलि, गौतम, कपिल, कणाद, याज्ञवल्क्य आदि हुए हैं। यह व ऐसे अनेक ऋषि जिनका इतिहास विलुप्त हो गया, संसार के महानतम पुरुष थे। अन्य सभी का स्थान इनके बाद आता है। राजनैतिक व अन्य कारणों से कोई किसी भी मनुष्य को महान् पुरुष मान सकता है परन्तु महानता की कसौटी मनुष्य का ज्ञान व कार्य होते हैं। यदि महान आत्माओं व पुरुषों का विस्तार करें तो इसमें हमारे सभी शहीद स्वतन्त्रता सेनानी और शहीद सैनिक भी आते हैं। जिन सेनानायकों के अन्तर्गत हमने पाकिस्तान व बंगलादेश के युद्ध जीते हैं वह भी महान थे। ईश्वर व ऋषियों की महानता में और बहुत कुछ वर्णन किया जा सकता है। विस्तार भय से हम लेख को विराम दे रहें हैं। ईश्वर व महर्षि दयानन्द सहित हम सभी ऋषियों व अन्य सभी सच्चे महान पुरुषों को नमन करते हैं।

-मनमोहन कुमार आर्य, -196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन:09412985121

## ऋषि बोधोत्सव हेतु दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

**( 1 ) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270,** पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 12-55 बजे मंगलवार दिनांक 21.02.2017 **( 2 ) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264,** सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रातः 8.20 बजे सोमवार दिनांक 20.02.2017 **( 3 ) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे सोमवार दिनांक 20.02.2017 **( 4 ) सर्वोदय एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478, नई दिल्ली से राजकोट** रात्रि 9.25 बजे रविवार दिनांक 19.02.2017 **( 5 ) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., 19266 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर,** 1.10 बजे रविवार दिनांक 19.02.2017 **( 6 ) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12916, पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.00 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा ( 7 ) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958, नई दिल्ली से अहमदाबाद** प्रतिदिन सायं 7.35 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

**राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँ: ( 1 ) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19263,** राजकोट से सराय रोहिल्ला सायं 7.25 बजे शनिवार दिनांक 25.02.2017 **( 2 ) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12915,** अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.45 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। **( 3 ) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957,** अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.25 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

( पृष्ठ 2 का शेष )

श्री चंद्रशेखर लोखंडे एवं श्री संतोष आर्य द्वारा लिखित **'शुद्धि आंदोलन एवं मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी'** पुस्तक का विमोचन, आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी द्वारा किया गया। स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर आधारित एक नाटिका का भव्य प्रदर्शन हुआ। इस अवसर पर ट्राईसाईकल, सिलाई मशीन तथा अन्य साम्रगी देकर सेवा प्रकल्प पूरा किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का श्रोताओं के लिए संदेश और स्वामी श्रद्धानंद के जीवन पर आधारित नाटिका थी।

अपने संदेश में आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी ने सर्वप्रथम स्वामी दयानंद जी के कार्यों एवं विचारों से सभी

को अवगत कराया। इसके बाद उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद के मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बनने की जीवन यात्रा का उल्लेख करते हुए किसी भी कार्य को श्रद्धापूर्वक तथा लगन से करने की प्रेरणा दी।

नाटिका में स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला गया। इस नाटिका का निर्देशन प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री अजय ठाकुर जी ने किया जिसमें डी.ए.वी. विद्यालय औंध पुणे के 350 से अधिक बच्चों ने प्रसंशनीय प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर श्रद्धानंन्द सूर्यवंशी जी, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी, श्री आचार्य ध्रुव देव जी, श्री सोममुनि वानप्रस्था जी, श्री चंद्रकांत गर्जे जी, श्री चंद्र शेखर लोखंडे जी, श्री संतोष आर्य जी, श्री सुधाकर शास्त्री जी, को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की ओर से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए किये गये कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। यह सम्मान श्री पूनम सूरी जी प्रधान आर्य प्रादेशिक नई दिल्ली ने अपने करकलमों से प्रदान किया।

जीवन में दो ही लोग असफल होते हैं
एक वो जो सोचते हैं लेकिन करते नहीं
दूसरे वो जो करते हैं पर सोचते नहीं...

टंकारा समाचार फरवरी 2017
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-02-2017
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.01.2017

# ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 23, 24, 25 फरवरी 2017 (गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 18 फरवरी 2017 से 24 फरवरी 2017 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्रीमती अंजलि (करनाल), श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : **डॉ. पूनम सूरी**

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

## बोधोत्सव

शुक्रवार दिनांक 24.02.2017

मुख्य अतिथि : माननीय श्री विजय रूपाणी (मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार)

विशिष्ट अतिथि : श्री एच आर गन्धार (प्रशासक डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी, जालन्धर)

अध्यक्षता श्रद्धांजलि सभा : श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

**कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्:** **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़), **स्वामी आर्येशानन्द जी** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द जी** (गुजरात), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री बावनभाई मेतालिया** (स्थानीय विधायक), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मौरबी), **डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री** (पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी), **श्री एस.के.शर्मा** (मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए), **श्री वाचोनिधी आर्य** (गांधीधाम) **एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिये एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज ''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा, जिला मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें, जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।**

आप दान राशि सीधे पंजाब नैशनल बैंक में खाता संख्या 4665000100001067 IFSC-PUNB0466500 में भी जमा करा सकते हैं। कृपया जमा राशि की सूचना दिल्ली कार्यालय को जमा रसीद, अपने पूरे पते सहित अवश्य भेजें ताकि दान की रसीद भिजवानें में सुविधा हो।

—: निवेदक :—

**शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

**श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा** जिला मौरबी-363650 (गुजरात) दूरभाष : (02822)287756

मुद्रक व प्रकाशक—रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय